ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही ५५४ फरवरी 2023 वर्ष १६ अंक ६

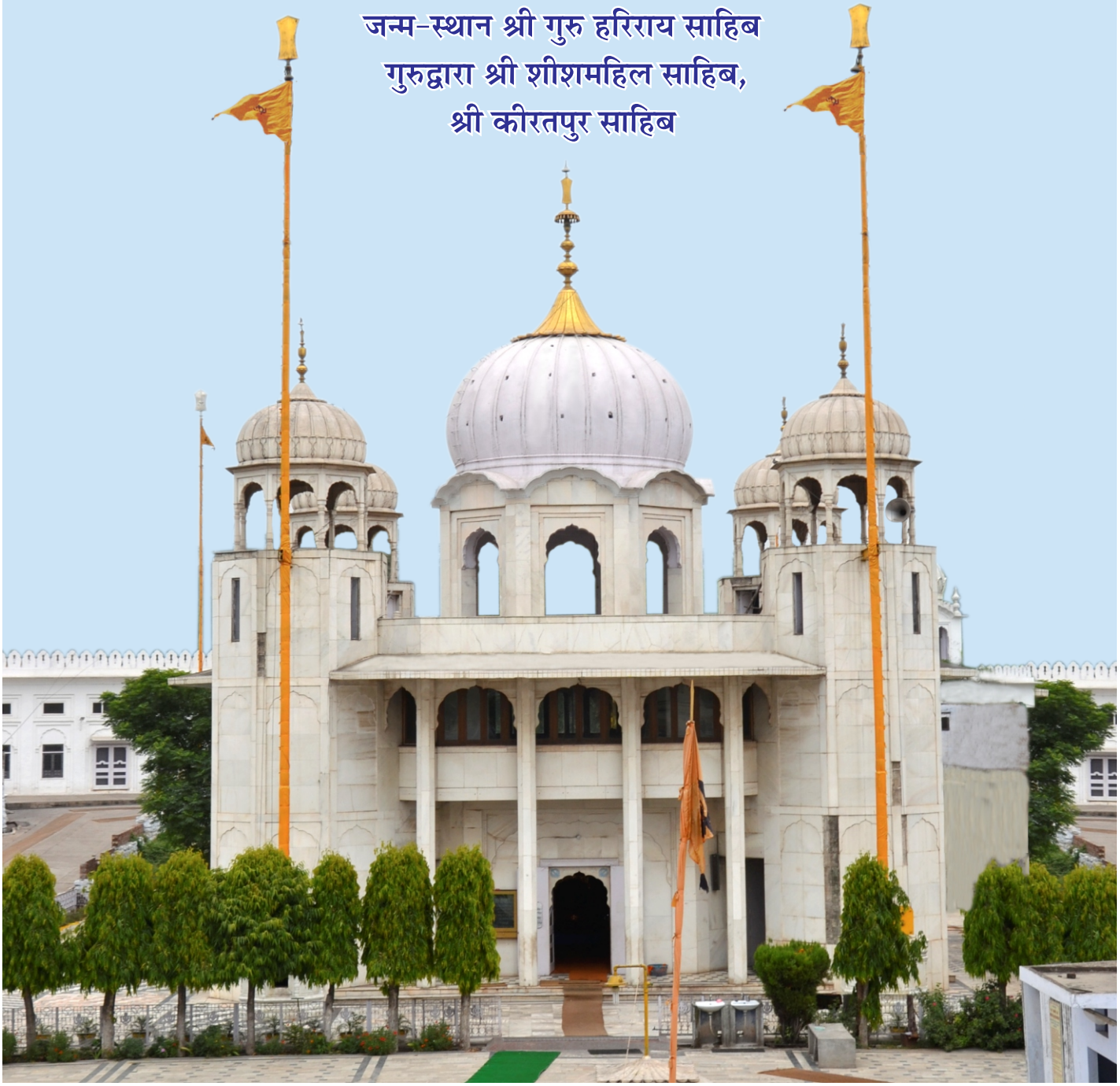

जन्म-स्थान श्री गुरु हरिराय साहिब
गुरुद्वारा श्री शीशमहिल साहिब,
श्री कीरतपुर साहिब

ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल
ढाडी-कवीशर गुरमति मिशनरी कॉलेज

गुरू की वडाली, श्री अमृतसर साहिब

प्रबंधाधीन : धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा स्थापित ढाडी-कवीशर कला के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार हेतु धर्म प्रचार कमेटी (शि. गु. प्र. कमेटी) श्री अमृतसर साहिब द्वारा ढाडी-कवीशर गुरमति मिशनरी कॉलेज संचालित किया जा रहा है, जिसमें तंती साज़—सारंगी, तानपूरा (ढड्ड) और कवीशरी का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

शैक्षिक योग्यता +२ उत्तीर्ण, विद्यार्थी अमृतधारी हो

दाख़िला शुरू

- उत्तम रिहायश, खुला वातावरण, सुंदर और हवादार इमारत।
- मेहनती और तजुर्बेकार स्टाफ।
- विद्या और रिहायश मुफ़्त।
- गुरबाणी संथा।
- १५००/- रुपए वज़ीफ़ा प्रति महीना (लंगर ख़र्च)।
- गतका प्रशिक्षण।
- कोर्स पूरा कर चुके योग्य विद्यार्थियों को संस्था/संबंधित अदारों में भर्ती के समय प्राथमिकता।

नोट:-
दाख़िला फार्म ऑनलाइन भी मंगवा सकते हैं।

gsssdkgmc@gmail.com | ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल ढाडी-कवीशर गुरमति मिशनरी कॉलेज

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

94630-94017 (प्रिंसिपल), 87279-83111

द्वारा :-
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

माघ-फाल्गुन, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 16 अंक 6 फरवरी 2023

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
श्री गुरु हरिराय साहिब जी का विलक्षण व्यक्तिव 8
-डॉ. मनजीत कौर
भक्त रविदास जी की बाणी के संदेश और उपदेश 13
- डॉ. राजविंदर सिंघ जोगा
गुरु-पुत्री, गुरु-पत्नी और गुरु-माता : बीबी भानी जी 19
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
सिक्ख पंथ की बड़ी त्रासदी : बड़ा घल्लूघारा 22
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सभराउं की जंग 25
- ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल (दिवंगत)
अकाली मोर्चे : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 37
-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर
साका श्री ननकाणा साहिब 44
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
दुखान्तिका साका श्री ननकाणा साहिब 50
-स. सुरजीत सिंघ
करम करत सि सूकरह 53
-डॉ. परमजीत कौर
सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया (कविता) 55
-डॉ. जसप्रीत कौर फ़लक
खबरनामा 56

गुरबाणी विचार

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३ ।। *(पन्ना १३६)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज फाल्गुन मास के उपलक्ष्य में उच्चारण की गई इस पावन पउड़ी में इस मास की ऋतु तथा वातावरण एवं लोक-सभ्याचार की पृष्ठभूमि में जीव-स्त्री को प्रभु-नाम की सच्ची स्तुति गायन कर मनुष्य जीवन सफल करने का महामार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि फाल्गुन मास में जब शीत ऋतु जाने लगती है और लोग खुशियां मनाते नज़र आते हैं, उस समय सौभाग्यशाली जीव स्त्रियों को प्रभु-मिलाप की इच्छा तथा उम्मीद लगती है। संत अथवा गुरु उनका प्रभु के साथ मिलाप का अपनी कृपामयी अगुआई से सबब बनाते हैं। उन जीव-स्त्रियों की जीवन-रूपी रात सुखमय हो जाती है, दुखों का ग्रास नहीं बनती। सौभाग्यशाली जीव-स्त्रियों की इच्छा पूर्ण होती है और उनको प्रभु-पति मिल जाते हैं। वे अपनी सखियों के साथ प्रभु की उपमा के ही गीत गाती हैं और उन्हें प्रभु-पति के अतिरिक्त अन्य कोई नज़र नहीं आता। वे किसी दूसरे को अर्थात् सांसारिक ख्याल आदि को अपने मन-मस्तिष्क में जगह नहीं देती।

ऐसे में वे जीव-स्त्रियां अपना लोक और परलोक संवार लेती हैं। उनको सदीवी सुख-शांति की मानसिक-आत्मिक अवस्था प्राप्त हो जाती है। वे संसार रूपी सागर में डूबने से बच जाती हैं और पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़तीं अथवा जीवन-मुक्त हो जाती हैं। हम

मनुष्य-मात्र को चाहे एक जीभ ही मिली है परंतु प्रभु के अनेक गुण इस एक जीभ द्वारा ही गायन किए जा सकते हैं। इसके लिए हमें सतिगुरु की शरण में जाना होता है। फाल्गुन मास में हमको सदैव प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। उसको अपनी स्तुति की जरा भी इच्छा नहीं है। यहां गहरी रमज़ है कि प्रभु की स्तुति करना हमारे अपने हित में है। यह हमारा कोई प्रभु के सिर एहसान नहीं है। प्रत्येक पल प्रभु की सच्ची स्तुति में लगाकर ही जीवन अर्थपूर्ण हो सकता है। समस्त मानव जीवन-रूपी फाल्गुन मास प्रभु-स्तुति के अनुकूल है।

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१ ॥ *(पन्ना १३६)*

श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस अंतिम पउड़ी में प्रभु-नाम के महातम और पावन बाणी का मूल प्रयोजन दर्शाते हुए मनुष्य-मात्र को नाम-बाणी द्वारा प्रभु-नाम के साथ जुड़कर अमूल्य मनुष्य-जन्म का मूल उद्देश्य सफल करने का मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि जिस-जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम का ध्यान किया उसी के ही उद्देश्यपूर्ण कार्य पूरे हुए; जिस-जिस ने पूर्ण गुरु के माध्यम से परमात्मा को याद किया वही रूहानी दरबार में सच्चा व खरा सिद्ध हुआ। सभी सुखों अथवा रूहानी सुखों के खजाने-रूपी हरि-चरणों से जुड़कर भय के कठिन सागर से पार हुआ जा सकता है। नाम से जुड़ने वाले को प्रेम-भक्ति रूपी अमूल्य वस्तु मिल जाती है। वह माया रूपी विष को सहन् नहीं करता। लालच रूपी झूठ से वह छूट जाता है। उसकी अनिश्चितता खत्म हो जाती है और वह प्रभु-नाम-रूपी सत्य से भरपूर हो जाता है। वह परमात्मा को सदैव मन-अंतर में टिकाकर रखता है। जिस पर परमात्मा की कृपा-दृष्टि है उसके सभी महीने, दिन, मुहूर्त अच्छे हैं अर्थात् परमात्मा की कृपा ही जीवन की सफलता का आधार है। गुरु जी कथन करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर भी कृपा-दृष्टि करो और मुझे अपने दर्शन-दीदार प्रदान कर दो!

संपादकीय

सिक्ख संघर्षों का प्रेरणा-स्रोत : बे-ग़म-पुरा

जात-पांत, रंग-नस्ल, ऊंच-नीच, छुआ-छूत, अमीर-गरीब के भेदभाव का घटनाक्रम दुनिया के बहुत हिस्सों में प्राचीन समय से ही चला आ रहा था। प्राचीन समय के ऐतिहासिक पृष्ठ ऐसी घटनाओं से भरे पड़े हैं। भारत में इसका प्रभाव कुछ ज्यादा ही देखने को मिला। इसके परिणामस्वरूप अनेक दुखदायी घटनाओं का जन्म हुआ।

पहले पातशाह साहिब श्री गुरु नानक देव जी ने इन बुराइयों के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद की। गुरु साहिब जी ने कूड़ तथा जुल्मी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष करने तथा हक-सच को स्थापित करने के लिए सिक्खों को इनके विरुद्ध संघर्ष करने की मात्र प्रेरणा ही नहीं दी, बल्कि खुद आगे बढ़कर लड़ाई भी लड़ी। इस आज़ादी के संघर्ष की ज्योति जगाए रखने के लिए गुरु साहिबान तथा उनके सिंघों ने अनेक कुर्बानियां दीं।

हर वर्ष जब फरवरी का माह आता है तो यह सिंघों द्वारा किए संघर्ष तथा उनकी शहादतों की याद ताज़ा करा देता है । इस माह में १७६२ ई. में अफ़गान हमलावर अहमद शाह अब्दाली ने भारी संख्या में फौज लेकर सिक्खों का नामो-निशान मिटाने का मंद इरादा धारण किया। मालेरकोटला के पास कुप्प-रुहीड़ा के इलाके में सिक्खों को बड़ी संख्या में घेरा डालकर शहीद किया। सिक्खों की गिनती इस घल्लूघारे में अब्दाली की फौज से बहुत कम थी, फिर भी सिक्खों ने डटकर मुकाबला किया। इस जंग में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिआ, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िआ, सरदार चढ़त सिंघ शुकरचक्किआ, सरदार तारा सिंघ घेबा के नेतृत्व में सिक्ख योद्धाओं ने अब्दाली की फौज का सामना करने के लिए बेमिसाल जद्दोजहद की । इस जद्दोजहद में तीस से पैंतीस हज़ार के लगभग सिक्ख शहादत प्राप्त कर गए। इन शहीद सिक्खों की यादगार भी पंजाब सरकार द्वारा बनाई गई है।

बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजों की धक्केशाही के विरुद्ध सिक्खों ने मोर्चे लगाकर शहादत प्राप्त की। उनमें से 'गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का साका' तथा 'जैतो का मोर्चा' भी फरवरी माह में घटित हुआ। अंग्रेजों की शह पर महंत गुरुद्वारों की पवित्रता को भंग करने के घटिया यत्न करने

लगे। महंतों ने गुरुद्वारों की जायदादों को पुश्तैनी बना लिया और वे ऐशप्रस्त हो गए। गुरुद्वारों में महंत आचरणहीन करतूतें करने लगे। गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी श्री ननकाणा साहिब के महंत नारायण दास ने अपनी गुंडागर्दी की सभी हदें पार कर लीं, जिस कारण सिक्खों ने गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध पंथक हाथों में लेने का प्रण किया। महंत ने हाकिमों की शह पर गुरुद्वारा साहिब की सीमा में गुंडों-बदमाशों को इकट्ठा कर लिया। जत्थेदार लछमण सिंघ धारोवाली के नेतृत्व में गुरु के सिक्ख गुरुद्वारे का प्रबंध पंथक हाथों में लेने के लिए शांतमयी रहने का प्रण करके गए, किंतु महंत के गुंडों ने इन पर बंदूकों, छवियों तथा गंडासों से हमला कर उन्हें शहीद कर दिया। कई सिंघ जलती हुई भट्ठी में फेंक दिये तथा कई जंड के वृक्ष के साथ बांधकर जला दिए। अंत में महंत को सिंघों के संघर्ष के आगे झुकना पड़ा तथा गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध पंथक हाथों में आ गया।

फरवरी माह में ही 'जैतो का मोर्चा' लगा। अंग्रेज सरकार द्वारा गुरुद्वारा पातशाही १० वीं गंगसर साहिब जैतो (जिला फरीदकोट) में नाजायज़ रूप से हस्तक्षेप किया गया। इसके प्रतिक्रम में 'जैतो का मोर्चा' लगा। सिक्खों ने घोर यातनायें झेलकर अंग्रेजों की सिक्ख विरोधी कार्यवाही का डटकर मुकाबला किया तथा शांतमयी ढंग से रहते हुए पुलिस की लाठियों की मार खाकर भी उनको अपने अधिकारों पर काबिज़ न होने दिया। इस मोर्चे की विजय को अंग्रेजों से आज़ादी प्राप्ति करने की पहली विजय भी माना गया ।

घल्लूघारों एवं मोर्चों का यह इतिहास सिक्खों को सतत् अन्याय के विरुद्ध अडिग रहने, लड़ने तथा हक-सच की स्थापि हेतु प्रेरणा देता रहेगा। समाज की समस्याओं के आगे सिक्ख पंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से प्रेरणा लेकर, सदैव जागृत रहकर 'बे-ग़म-पुरा' की सृजना के लिए गतिशील हो सकता है। इसमें सभी सुखी बस सकेंगे; किसी भी जुल्म, अन्याय तथा अनचाही पाबंदियों आदि से छुटकारा पा सकेंगे।

श्री गुरु हरिराय साहिब जी का विलक्षण व्यक्तिव

*-डॉ. मनजीत कौर**

प्रकृति-प्रेमी, संकल्प के उत्कर्ष, सद्गुणों से मानवीय मूल्यों की रक्षा करने वाले, अज्ञानता से ज्ञान की ओर मार्ग प्रशस्त करने वाले, विकट परिस्थितियों में सहजता से उबारने वाले, करुणा के सागर श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जन्म (प्रकाश) बाबा गुरदित्ता जी तथा माता निहाल कौर जी के घर माघ सुदी १३, संवत् १६८६ तद्नुसार १६ जनवरी, १६३० ई. को कीरतपुर साहिब, जिला रोपड़ (पंजाब) में हुआ।

मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी आपके दादा जी थे। उनके महान व्यक्तित्व की अमिट छाप आपके जीवन में सतत् दृष्टिगत होती है। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा दादा जी के कुशल निर्देशन में हुई, जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ आपको शस्त्र-विद्या में पारंगत (पूर्ण निपुण) किया गया। फलत: आपके व्यक्तित्व में करुणा, दया, प्रेम, निर्भयता, क्षमाशीलता, परोपकारी वृत्ति एवं शूरवीरता का सुंदर सुमेल होता गया। गुरु जी के विलक्षण व्यक्तित्व से दिशा-निर्देश लेकर कैसे कोई व्यक्ति अपना जीवन सफल कर सकता है, कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों से जानने का प्रयास करते हैं :—

प्रकृति-प्रेमी : गुरबाणी में उस कादिर की कुदरत के अनेक मनोरम दृश्यों को अंकित किया गया है :

बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ (पन्ना ४६९)

यही नहीं, प्रकृति के कण-कण में श्री गुरु नानक देव जी कुदरत रूपी शक्ति की विद्यमानता को अर्थात् सर्वकला समर्थ ईश्वर की अन्तरनिहित ऊर्जा को सर्वत्र समस्त प्राणियों में रमण करता दर्शाते हुए पावन फरमान करते हैं :

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ
कुदरति भउ सुख सारु ॥
कुदरति पाताली आकासी
कुदरति सरब आकारु ॥. . .
कुदरति जाती जिनसी रंगी
कुदरति जीअ जहान ॥. . .
सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता
पाकी नाई पाकु ॥ (पन्ना ४६४)

यह हकीकत है कि जो प्राणी प्रकृति से प्रेम नहीं करता वह न तो मानवता से प्रेम कर सकता है और न ही ईश्वर से। श्री गुरु हरिराय साहिब जी अत्यन्त कोमल हृदय वाले हैं। उन्हें प्रकृति से अथाह प्रेम है। उनके प्रकृति-प्रेम का एक सुंदर

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

उदाहरण है— एक दिन प्रात: काल प्रकृति के मनोरम दृश्यों को निहारते हुए रमणीय वेला में गुरु जी उपवन में सैर कर रहे हैं। अचानक उनके लंबे चोगे (पोशाक, लबादा) से टकराकर एक प्यारा-सा पुष्प धरती पर गिर कर बिखर जाता है। तभी गुरु जी का कोमल हृदय व्यथित हो उठता है। अनायास उनके हृदय में यह ख्याल आता है कि यह सुंदर पुष्प तो परोपकारी वृत्ति का है। इसने न जाने अभी कितने प्राणियों को अपने सौन्दर्य एवं सुंगध से आनंदित करना था और वातावरण को सुरभित करना था। अपने पोते श्री गुरु हरिराय साहिब जी का पुष्प के प्रति इतनी संवेदना का भाव इत्तेफाक से उनके दादा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने देखा तो तुरंत अपने पोते के पास आए। सारा वृत्तांत जाना। फिर समझाया कि अगर चोगा बड़ा पहनना है तो उत्तरदायित्व बी बड़े होते हैं। दूसरों के अधिकारों का पूर्णतया ध्यान रखा जाना अनिवार्य है। यह संसार भी एक उपवन की भांति है। इसमें विचरण करते हुए इसकी शोभा और अधिक बढ़ानी चाहिए। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने दादा जी के वचन की आजीवन कमाई की अर्थात् जीवन-पर्यन्त श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के आदेश को सम्मुख रखा और अपना दायित्व बाखूखी निभाया।

पर्यावरण-संरक्षक : जहां गुरु जी का प्रकृति-प्रेम सम्पूर्ण जीवन बना रहा, वहीं उन्होंने पर्यावरण-संरक्षण हेतु अनेक कार्य-योजनाएं बनाईं, कीरतपुर साहिब में ५२ बागों का निर्माण करवाया तथा कीरतपुर साहिब को 'बागों का शहर' के रूप में परिवर्तित कर दिया। प्रो. जोगिंदर सिंघ अपनी पुस्तक 'कीरतपुर साहिब' के पृष्ठ ५४ पर लिखते हैं कि ''इन बागों में अनेक प्रकार के फलों के पेड़ थे, जैसे कि आम, खजूर, आंवला, मालटा, नारंगी, नींबू, बेर, अंगूर, बादाम, हरड़, बिल्ल, नाशपाती आदि। आम कई किस्म के थे।'' इन बागों की देखभाल भाई भगतू जी किया करते थे।

उनका पशु-पक्षियों के प्रति भी असीम प्रेम था। उन्होंने एक चिड़ियाघर बनवाया, जहां बीमार एवं घायल पशु-पक्षियों का इलाज किया जाता। पशु-पक्षी स्वच्छंदता से विचरण करते। दूर-दूर से लोग इनके चिड़ियाघर को देखने हेतु आते।

प्राकृतिक औषधालय : गुरु जी द्वारा एक ऐसा बाग भी लगवाया गया जिसमें औषधीय पौधे और वृक्ष लगाए गए। इसके अतिरिक्त पर्वतों की चोटियों औऱ जंगलों से जड़ी-बूटियों, औषधीय गुणों से भरपूर पौधों तथा वृक्षों से इस बाग को परिपूर्ण कर रोगियों के लिए प्राकृतिक औषधालय (शफाखाना) का निर्माण किया गया, जिसमें मुफ्त इलाज प्रदान किया जाता। दूर-दूर से रोगी आते। इस दवाखाने में बहुत ही अनुभवी वैद्य-हकीमों की नियुक्ति गुरु जी ने कर रखी थी, जहां आकर असाध्य रोग भी ठीक हो जाते थे। गुरु जी स्वयं प्रतिदिन औषधालय में आते, नि:शुल्क औषधि बांटते तथा अपनी कृपा-दृष्टि से रोगियों के रोग का निवारण करते। यहां केवल

मनुष्यों का ही नहीं, अपितु घायल पशु-पक्षियों का भी सुचारू ढंग से इलाज किया जाता था।

इस औषधालय की एक विशेषता और भी थी कि यहां किसी भी अस्वस्थ व्यक्ति के नि:शुल्क उपचार के साथ-साथ रोगी के भोजन तथा रहने की भी व्यवस्था की जाती थी। इस संदर्भ में एक और तथ्य उल्लेखनीय है कि एक बार शाहजहां के बड़े बेटे दारा शिकोह को जब औरंगजेब द्वारा शेर की मूंछ का बाल खिला दिया गया था, परिणामस्वरूप दारा शिकोह भयानक अजीर्ण रोग से ग्रस्त हो गया था। बड़े-बड़े वैद्य-हकीम भी उसका इलाज न कर सके। हर तरफ से निराश-हताश हुए शाहजहाँ को किसी हकीम से श्री गुरु हरिराय साहिब जी के शफाखाना की खबर मिली और ज्ञात हुआ कि गुरु जी के पास हर मर्ज की दवा है। अपने पुत्र को तिल-तिल मरता देख दुर्लभ औषधि की प्राप्ति हेतु शाहजहाँ द्वारा दारा शिकोह को गुरु साहिब जी के समक्ष लाया गया, जहां श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने मानवतावादी दृष्टिकोण से आम रोगियों की भांति उसका इलाज किया। दारा शिकोह शीघ्र ही स्वस्थ हो गया। पूरी तरह से स्वस्थ होकर दारा शिकोह गुरु जी के दर्शन करने आया और बड़े अदब-सत्कार से गुरु जी का धन्यवाद किया, साथ ही लंगर के लिए जागीर देने हेतु अनुरोध किया, लेकिन गुरु जी ने पूर्व में चली आई गुरु-घर की मर्यादानुसार जागीर लेने से इंकार कर दिया। दारा शिकोह पर गुरु जी के पावन उपदेशों तथा सिक्खों के उच्च आचरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा और वह गुरु-घर का श्रद्धालु बन गया।

गुरबाणी से अथाह प्रेम : श्री गुरु हरिराय साहिब जी नाम-सिमरन के अभ्यासी, गुरबाणी के प्रति अपार श्रद्धा एवं अथाह प्रेम रखने वाले थे। अमृत वेले उठकर सिमरन में तल्लीन हो जाते। दृढ़ता से नितनेम करते। उपरांत संगत में जाकर पावन उपदेश देते। गुरबाणी शबद-कीर्तन श्रवण करते। संगत द्वारा जिज्ञासावश किए गए प्रश्नों का बड़ा सटीक एवं सुंदर जवाब देकर उन्हें शांत करते। गुरबाणी के प्रति अपार, अथाह प्रेम का एक उदाहरण यहां उल्लेखनीय है :—

एक बार संगत अमृतमयी गुरबाणी का कीर्तन करते हुए बड़े प्रेम एवं श्रद्धा-भावना से कीरतपुर साहिब पहुंची। रात्रि का समय था। श्री गुरु हरिराय साहिब जी पलंग पर विश्राम कर रहे थे। जैसे ही इलाही बाणी के मधुर शबद गुरु जी ने सुने, वे तुरंत बड़ी तीव्रता से उठे। तीव्रता के कारण गुरु जी के चरण पलंग से टकरा गए और खून बहने लगा। गुरु साहिब शीघ्र ही संगत में जा विराजे। संगत ने जब गुरु जी के पैर से रक्त-स्राव होते देखा तो गुरु जी को विश्राम करने हेतु प्रार्थना की। इस पर गुरु साहिब ने कहा कि गुरबाणी-कीर्तन हो रहा है। इससे स्पष्ट है कि गुरु साहिब के हृदय में अथाह श्रद्धा और सत्कार था इलाही बाणी के प्रति।

धर्म-प्रचारार्थ विविध आयाम : गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी के प्रति श्रद्धा एवं सत्कार के साथ-साथ पंगत एवं संगत की मर्यादा

को दृढ़ करवाया। पंजाब के मालवा तथा दुआबा क्षेत्र में प्रचार-दौरे किए तथा सिक्ख धर्म को प्रफुल्लित किया। इतिहासकारों की खोज के अनुसार श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने मुकंदपुर, जो वर्तमान में जलंधर जिले में स्थित है, में अपनी इस यात्रा के दौरान बांस वृक्ष की एक शाखा जमीन में गाड़ी, जो आज तक एक शानदार वृक्ष के रूप में शोभायमान है।

गुरु जी ने धर्म प्रचार-कार्य की गति धीमी नहीं पड़ने दी। उन्होंने इसके लिए अनेक नए प्रचारक नियुक्त किए और उन्हें दूर-दूर स्थानों पर भेजा। भाई सुथरे शाह को दिल्ली तथा भाई फेरू को राजस्थान प्रचार हेतु भेजा। कैथल में बागड़िया खानदान के मुखिया को मालवा क्षेत्र में प्रचारार्थ भेजा। इतिहासकारों के अनुसार भाई नंद लाल पुरी श्री गुरु हरिराय साहिब जी के पास सियालकोट आए और गुरु जी से उपदेश मांगा। गुरु जी ने फरमान किया कि टोपी नहीं पहननी, तंबाकू का सेवन नहीं करना तथा केश कत्ल नहीं करवाने। भाई नंद लाल पुरी ने तीनों वचनों को आजीवन निभाया। परिणामस्वरूप उसका नाम 'धर्मी' पड़ गया।

गुरु जी ने अपने जीवन-काल में कोई युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन फिर भी वे समय की नजाकत को समझते हुए अपने पास २२०० घुड़सवारों की फौज तैयार-बर-तैयार रखते थे।

धार्मिक उसूलों का दृढ़ता से पालन : गुरु-घर के विरोधी अपना मतलब निकालने हेतु निरंतर समय के बादशाह औरंगजेब के कान भर रहे थे कि सिक्खों के गुरु ने दारा शिकोह की मदद की है। यही नहीं, उन्होंने अपने धर्म-ग्रंथ में इसलाम के खिलाफ लिखा है। औरंगजेब ने इन तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु श्री गुरु हरिराय साहिब जी को दिल्ली आने हेतु बुलावा भेजा। गुरु जी औरंगजेब की कुटिल चालों को भली-भांति जानते थे। उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमने औरंगजेब को न तो कुछ देना है और न ही हम उससे कुछ लेने की चाहत रखते हैं। यह फरमाते हुए उन्होंने दिल्ली जाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया और अपने बड़े पुत्र रामराय को दिल्ली यह समझाते हुए भेजा कि ''वहां जाकर कोई करामात नहीं दिखानी और न ही श्री गुरु नानक देव जी के घर की मर्यादा को धूमिल होने देना है! औरंगजेब के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर निर्भय होकर दृढ़तापूर्वक देना! एक अकाल पुरख वाहिगुरु के अतिरिक्त किसी का भय नहीं मानना!'' गुरु जी से आशीर्वाद पाकर रामराय दिल्ली औरंगजेब के समक्ष पहुंचा तो गुरु जी के आदेश भूल कर वहां औरंगजेब को प्रभावित करने हेतु अनेक करामातें दिखाईं। इतिहास में ७२ करामातों का जिक्र आया है, जिससे औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन उसकी प्रसन्नता रामराय को बहुत महंगी पड़ी। अगर करामातें दिखाने तक ही रामराय सीमित रहता तो शायद कोमल और दयालु-हृदय गुरु जी उसे क्षमा कर देते, लेकिन रामराय ने गुरबाणी की पंक्ति बदलने की जो गुस्ताखी की वह गंभीर अपराध था। हुआ यूं कि जब औरंगजेब रामराय की करामातों से अत्यधिक प्रभावित हो गया तो

उसने रामराय से एक प्रश्न और कर दिया कि ''तुम्हारे धर्म-ग्रंथ में श्री गुरु नानक देव जी ने यह जो लिखा है— 'मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥' यह हमारे धर्म की तौहीन है।''

रामराय यहां अपनी छवि बनाये रखने हेतु पिता श्री गुरु हरिराय साहिब जी के पावन उपदेश पूरी तरह से भूल गया और सिक्ख धर्म की मर्यादा तथा पवित्र उसूलों को पूरी तरह से विस्मृत कर बादशाह को खुश करने के लिए बड़ी चालाकी से बोला कि ''वास्तव में यह पंक्ति ''मिटी मुसलमान की'' नहीं, अपितु ''मिटी बेईमान की'' है। यह सुन कर समय का मुगल बादशाह औरंगजेब बहुत प्रसन्न हुआ और उसने प्रशस्ति-पत्र के साथ-साथ दून घाटी का इलाका रामराय को जागीर के रूप में प्रदान कर दिया।

जब श्री गुरु हरिराय साहिब जी को रामराय द्वारा पावन गुरबाणी की पंक्ति बदलने की गुस्ताखी की खबर मिली तो गुरु जी ने आजीवन समक्ष न आने अर्थात् माथे न लगने का आदेश भिजवा दिया। यही नहीं, रामराय को गुरुता हेतु हर प्रकार से अयोग्य जानकर अपने छोटे सुपुत्र श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी को गुरुआई प्रदान की। श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने १७ वर्ष तक गुरु-पद को बहुत ही सुंदर ढंग से सम्भाला और सिक्ख धर्म की जड़ों को मजबूती एवं सुदृढ़ता प्रदान की। जीवन के प्रत्येक पल को सार्थक करते हुए सिक्खी के प्रचार-प्रसार में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया। सिमरन और सेवा-भावी कार्यों में हर पल लगे रहने वाले गुरु जी ने गुरबाणी के प्रति गहरी निष्ठा, श्रद्धा-भावना एवं सत्कार बनाए रखने की प्रणाली दृढ़ करने के साथ-साथ लंगर वितरित करने के दौरान नगाड़ा बजाना, सामूहिक रूप से खड़े होकर एकाग्रता से अरदास करने का विधान तथा राजनीतिक प्रपंचों से बचने हेतु एवं भावी संकटों से संगत को सुचेत किया। यही नहीं, उन्होंने खुशामद करने वालों से निरंतर दूरी बना कर रखने का भी आदेश दिया। धार्मिक उसूलों पर अडिग रहने की हिदायत के साथ-साथ सिक्खी प्रचार हेतु तीन केंद्रों की स्थापना भी की।

वस्तुत: श्री गुरु हरिराय साहिब जी के विलक्षण व्यक्तित्व को शब्दों द्वारा बयान करना तो नामुमकिन है, फिर भी गुरु साहिबान जी के पावन उपदेशों को अमल में लाकर गुरु जी के प्रेम एवं कृपा के पात्र बना जा सकता है, जैसा कि पावन गुरबाणी का फरमान है :

चरन कमल हरि जन की थाती
कोटि सूख बिस्राम॥
गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि
नानक सद कुरबान॥ (पन्ना ६८२)

भक्त रविदास जी की बाणी के संदेश और उपदेश

*- डॉ. राजविंदर सिंघ जोगा**

भक्त रविदास जी सामाजिक तौर पर तथाकथित शूद्र मानी जाती जाति के साथ सम्बन्ध रखते थे। उनसे पूर्व का समय बहुत ही भयानक था, जिसमें शूद्र तथा अन्य तथाकथित नीच जाति के लोगों को रूहानी और आत्मिक मंडल की तरफ जाने की तो क्या, सोचने की भी आज्ञा नहीं थी। इसकी उल्लंघना करने का दंड मृत्यु थी।

प्रो. दीवान सिंघ लिखते हैं कि हज़ारों वर्ष की दुर्दशा के बाद, जब उनका (शूद्रों का) जीवन अभी भी जानवरों के स्तर से निम्न था, उनमें से उठ कर भक्त रविदास जी आकाश-मंडल में एक तारे की भांति चमके। उन्होंने बनारस के मशहूर पंडितों का नेतृत्व किया।

भक्त रविदास जी के जन्म-स्थान तथा जन्म-तारीख़ के बारे में मिलते तथ्यों में समानता नहीं, मगर अधिकांश विद्वानों की सहमति बनारस, उत्तर प्रदेश में सन् १३७६ ई. के साथ है। भक्त रविदास जी ने १६ रागों में ४० शबद उच्चारण किये, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज हैं। इसके अलावा उनकी और भी बाणी उच्चारण की हुई मानी जाती है, मगर हम श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज भक्त रविदास जी की बाणी के हवाले के अनुसार ही बात करेंगे। भक्त जी ने जब अपने समकालीन समाज को पाखंड, दंभ और प्रदर्शन के कर्मकांडों में उलझे हुए देखा, तो आपने निश्चित रूप से सदाचारक नियमों का प्रचार किया। आप जी की बाणी धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सदाचारक पक्ष से गिर चुके लोगों को नैतिक जीवन-मूल्यों से अवगत करवाती हुई सर्व-साधारण को कल्याणकारी संदेश देती है। किसी भी संत, महापुरुष या भक्त की विचारधारा का अध्ययन सीमित विषयों में नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी सोच और विचारधारा का घेरा बहुत विशाल होता है, इसलिए यहाँ भक्त रविदास जी की बाणी में से कुछ विषयों पर विचार करने का यत्न किया गया है, जैसे— परमात्मा एक और सर्व व्यापक है, सिमरन/प्रेमा-भक्ति, जात-पात, मूर्ति-पूजा का खंडन, सच्चा श्रम और नाशमानता आदि। इन विषयों पर निम्नलिखित के अनुसार

**सहयोगी संपादक, गुरुद्वारा गजट एवं रिसर्च स्कालर, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, फोन : ९५०१३-००४५९*

विचार किया जा है :—

परमात्मा एक और सर्वव्यापक है :

हिंदुस्तान बहुधर्मी देश है। इसमें अनेक मतों के लोग रहते हैं, जैसे कि एक-ईश्वरवादी, बहु-ईश्वरवादी और अ-ईश्वरवादी। जब राजसी सत्ता हाथों में हो और बहु-ईश्वरवादी लोगों के धर्म की तथाकथित उच्च श्रेणी का बोलबाला हो, तो एक-ईश्वरवाद का संदेश देना विषम कार्य है। भक्त रविदास जी ने ऐसे समय में एक ईश्वरवाद का संदेश दिया। डॉ. कुलदीप सिंघ धीर लिखते हैं कि ''ऐसे माहौल में भी कोई निर्भय, निरवैर और स्वस्थ शख्सियत पैदा हो तो करिश्मा ही कहा जा सकता है। भक्त रविदास जी एक ऐसा ही करिश्मा थे। वे निर्भय, निरवैर, मानववादी विचारों वाली शख्सियत थे, जो हर प्रकार की हीन भावना से मुक्त होकर जीवन के कर्म-क्षेत्र में विचरण करते हुए एक अकाल पुरख के बिना अन्य किसी का भय नहीं मानते थे।'' परमात्मा की एकता के बारे में गुरु साहिबान, भक्त साहिबान और भट्ट साहिबान एकमत हैं। भक्त रविदास जी परमात्मा की एकता और सर्वव्यापक स्वरूप को बयान करते हुए कहते हैं— ''सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुोगवै सोई॥'', ''सभ घट भीतरि हाटु चलावै'' अर्थात् प्रभु-खसम अनेक रूप बना कर सभी में एक समान व्याप्त है। सभी घट में स्वयं विद्यमान होकर जगत के रंग देख रहा है। वह सभी शरीरों में विद्यमान होकर स्वयं ही रोज़ी-रोटी का रोज़गार पैदा कर रहा है। भक्त जी कहते हैं कि सारा जग मैं-मेरी में लगा हुआ है और वह जायदाद और सगे-संबंधियों को अपना समझ कर ठगा जा रहा है। मैं एक परमात्मा का सिमरन कर उसके संग लग कर मुक्त हो गया हूं— ''कहि रविदास सभै जगु लूटिआ॥ हम तउ एक रामु कहि छूटिआ॥''

सिमरन / प्रेमा-भक्ति : भक्त जी अपनी बाणी में परमात्मा को प्राप्त करने के लिए सिमरन करने, भक्ति करने का विचार दृढ़ करवाते हैं, क्योंकि नाम-सिमरन के द्वारा मानव आवागमन के बंधनों से मुक्त हो सकता है। भक्त जी के अनुसार परमात्मा का नाम ही सच्चा है और बाकी दुनिया का प्रसार झूठा एवं नाशवान है— ''मुकंद मुकंद जपहु संसार॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥ सोई मुक्ंदु मुकति का दाता॥'' तात्पर्य— दुनिया के लोगो! मुक्ति-दाता प्रभु का सदा सिमरन करो! उसके सिमरन के बिना यह शरीर व्यर्थ ही चला जाता है। परमात्मा ही दुनिया के बंधनों से छुटकारा दिलाने वाला है।

भक्त रविदास जी परमात्मा की भक्ति से सम्बन्धित अपने आप को 'दास', 'जन' या 'भक्त' कहकर सम्बोधित करते हैं— ''प्रेमु

जाइ तउ डरपै तेरो जनु॥ . . . ता महि मगन होत न तेरो जनु॥ प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन॥'' भक्त रविदास जी ने परमात्मा के साथ इतनी अभेदता प्रकट कर ली थी कि वे तो यहाँ तक कहते हैं— ''जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता॥'' तात्पर्य— हे प्रभु! यदि हम जीव पाप न करते तो तुम्हारा नाम (पापियों को पवित्र करने वाला) पतित पावन कैसे हो सकता था! यहाँ बस नहीं, भक्त जी की पूर्ण अभेदता का दृश्य यहाँ से प्रकट होता है कि परमात्मा के बारे में उनका इस प्रकार संबोधित होना— ''जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे॥ अपने छूटन जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥'' तात्पर्य— हे माधो (प्रभु)! अगर हम मोह के फंदे (बंधन) से बंधे हुए थे, तो हमने तुम्हें भी अपने प्यार की डोर के साथ बाँध लिया है। हम तो (उस मोह के फंदे में से) तुम्हारा सिमरन कर बाहर निकल आए हैं, मगर तुम हमारे प्यार की जकड़न में से कैसे निकलोगे?

जात-पात : वैदिक युग में वर्ण-व्यवस्था दृढ़ और रूढ़िवादी नहीं थी, चाहे इस दिशा में उसका झुकाव होना आरंभ हो गया था। पौराणिक युग से ब्राह्मणों की पदवी परंपरागत हो चुकी थी। ब्राह्मण प्रत्यक्ष रूप से देवता माना जाता था। ब्राह्मणों के मुँह से निकली हर बात की पालना की जाती थी। ब्राह्मण दुख या मुश्किल के समय कोई अयोग्य काम भी करे तो वह कलंकित नहीं माना जाता था। मध्यकालीन भारत की दशा और दिशा बहुत दयनीय थी, क्योंकि मानव-समाज में मनु स्मृति के प्रभाव के अधीन वर्ण-व्यवस्था शिखर पर थी। धर्म-विभाजन, जात-पांत, रंग-भेद, लिंग-भेद, नस्ल-भेद आदि के बोलबाले के कारण समाज में हाहाकार मची हुई थी। मानवता में बहुत पतन आ चुका था। इंसानियत नाम की कोई चीज़ नहीं बची थी। मानव-चेतना पूरी तरह से आत्म-स्वार्थ, व्यक्तिवाद और नैतिक जीवन-मूल्यों के बिना कार्य कर रही थी। ऐसे समय में भक्त रविदास जी का अति गरीब और सामाजिक तौर पर मानी जाती तथाकथित अछूत जाति में जन्म लेना अपने आप में श्रापित होने की भांति था। भक्त रविदास जी ने अपने व्यवसाय और निम्न जाति की कोई परवाह नहीं की और न ही किसी बात का परमात्मा के प्रति गिला ही किया कि उनका जन्म निम्न जाति में हुआ है, बल्कि बड़े फख्र के साथ अपने व्यवसाय और जाति का अपने शब्दों में भरपूर प्रयोग किया है। आप जी ने मानवीय-अस्तित्व को सर्वोच्च बताते हुए संदेश दिया— ''दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै॥ राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि

भगति कहहु किह लेखै॥'' तात्पर्य— मानव-जन्म बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है। इस जन्म में यदि परमात्मा की भक्ति न की तो यह तथाकथित उच्च जाति, ऊँचे महल किसी काम के नहीं। परमात्मा की भक्ति करने में जाति कोई मायने नहीं रखती, बल्कि हृदय और कर्म शुद्ध होने चाहिए— ''मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा॥'' भक्त रविदास जी ने मानवीय सांझ और सह-अस्तित्व का ऐसा संदेश सृजित किया, जिसने साधारण मानव को एक-दूसरे के निकट ला खड़ा किया। यहाँ तक कि उच्च श्रेणी-प्रधान ब्राह्मणों को भी भक्त जी की शरण में आकर चरणों पर शीश झुकाना पड़ा— ''अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दास॥''

मूर्ति-पूजा का खंडन : भक्त रविदास जी ने देखा कि लोग देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करते हैं और वे उनकी पूजा के लिए अपनी तरफ से शुद्ध जल, फूल, दूध आदि वस्तुओं द्वारा प्रभु को प्रसन्न करने का यत्न करते हैं। भक्त जी ने कहा कि ये वस्तुएं तो पहले ही जूठी हो जाती हैं, इसलिए परमात्मा ऐसी वस्तुओं की भेंट से प्रसन्न नहीं होता, बल्कि वह तो तन-मन की भेंट को स्वीकार करता है— *''दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥ . . . तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ॥''* भक्त रविदास जी ने अपनी बाणी में परमात्मा से सम्बन्धित बहुत-से विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है, जैसे— राम, राजा राम, राजा राम चंद, माधव, मुरारि, मुकंद, गोबिंद, देव, अनंत करता, निरंजन, सतिनामु, प्रभ, नाराइन आदि। इसी प्रकार गुरु साहिबान तथा भक्त साहिबान और एवं भट्ट साहिबान ने परमात्मा के संबंध में विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया है, जो मूर्ति-पूजा आदि का खंडन करते हैं।

सच्चा श्रम (सच्ची किरत) : भक्त रविदास जी अपने व्यवसाय और जात-पांत के बारे में कहते हैं— ''मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा॥'' ''जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा॥ बात करते हैं— नागर जनां मेरी जाति बिखिअत चंमारं॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥''

भाई गुरदास जी ने दसवीं वार में भक्त रविदास जी का ज़िक्र किया है :

भगतु भगतु जगि वजिआ
चहु चकां दे विचि चमिरेटा।
पाण्हा गंढै राह विचि कुला

धरम ढोइ ढोर समेटा।
जिउ करि मैले चीथड़े
हीरा लालु अमोलु पलेटा।
चहु वरना उपदेसदा
गिआन धिआनु करि भगति सहेटा।
न्हावणि आइआ संगु मिलि
बानारस करि गंगा थेटा।
कढि कसीरा सउपिआ
रविदासै गंगा दी भेटा।
लगा पुरबु अभीच दा डिठा
चलितु अचरजु अमेटा।
लइआ कसीरा हथु कढि
सूतु इकु जिउ ताणा पेटा।
भगत जनां हरि मां पिउ बेटा॥ (वार १०:१७)

भाई गुरदास जी ने भक्त रविदास जी के जीवन से सम्बन्धित एक चित्र पेश किया है कि वे सामाजिक तौर पर मानी जाती तथाकथित शूद्र जाति में से, जो कि बहुत ही निम्न स्तर का जीवन व्यतीत कर रही थी, जैसे मलिन कपड़ों में एक हीरा लपेटा हो, की तरह प्रकट हुआ। भक्त जी पिता-पुरखी व्यवसाय के अनुसार जूतियां गाँठ कर और मरे हुए पशु ढोकर अपनी उपजीविका चलाते थे। उन्होंने परमात्मा की इतनी बंदगी (भक्ति) की कि चारों वर्णों को उपदेश देने लगे।

संसारी मानव अपनी ज़िंदगी बढ़िया ढंग के साथ जीने के लिए कोई न कोई काम करता है, मगर कई बार वह दुनियावी शोहरत और झूठी खुशियाँ हासिल करने के लिए अपने व्यवसाय में से होने वाली आमदन को बढ़ाने के लिए गलत तरीके अपना लेता है। मानव अपने व्यवसाय को ऊँचा उठाने या लोगों में अपने आप को ऊँचा बताने के लिए कोई पैंतरा इस्तेमाल कर लेता है। भक्त रविदास जी जूतियां गाँठने का अपना व्यवसाय नहीं छोड़ते, यहाँ तक कि वे कई बार जरूरतमंदों की जूतियां बिना मेहनताना लिए भी गाँठ देते थे। वे सच्चे श्रम से अच्छी तरह से अवगत थे। इसीलिए भक्त रविदास जी ने माया के जंजाल में फंसे मानव की स्थिति को बड़े सरल तरीके से बयान किया है कि मानव कैसे माया के आने से खुश होता है और माया के चले जाने से दुखी होता है— ''माटी को पुतरा कैसे नचतु है॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है॥'' तात्पर्य— माया के मोह में फंस कर यह मिट्टी का पुतला कैसे अजीबो-गरीब ढंग से नाच (भटक) रहा है। चारों तरफ़ माया की बातें सुनता और देखता हुआ हर तरफ़ ढूंढता फिरता है।

नाशमानता : भक्त जी ने इस संसार की नाशमानता की तरफ ध्यान दिलाते हुए कहा है कि मानव इस संसार में माया के भ्रम में फंस कर सुख-दुख की स्थिति को मानता है, परन्तु उसका शरीर व यह संसार नाशवान है— ''

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा॥ हाड मास नाड़ीं को पिंजरु पंखी बसै बिचारा॥... इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥'' तात्पर्य— यह मनुष्य शरीर जल की दीवार की तरह है और इसे थामने वाला खंभा हवा का है। इसे माँ का रक्त और पिता का वीर्य रूपी कीचड़ लगा हुआ है। यह हड्डी, मांस और नाड़ियों का पिंजर बना हुआ है, जिसमें बेचारा जीव रूपी पक्षी निवास कर रहा है। इस रेत की दीवार, हवा के खंभे तथा रक्त-वीर्य के गारे का कोई भरोसा नहीं। यह शरीर राख की ढेरी बन जाना है।

आदर्श समाज सृजित करना : दुनिया के इतिहास को पढ़ने से पता चलता है कि दुनिया पर जितने भी संत-महापुरुष या भक्त हुए हैं उन सभी ने एक अच्छे समाज की सृजना करने के लिए प्रयत्न किये। इसी तरह भक्त रविदास जी ने भी अच्छे समाज की सृजना करने हेतु बात करते हुए अपनी बाणी में आदर्श समाज का नक्शा प्रस्तुत किया है— ''बेगम पुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥ ... कहि रविदास खलास चमारा॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥'' इस शबद में भक्त रविदास जी ने चाहे मुख्य रूप से आध्यात्मिक अवस्था का ही ज़िक्र किया है, परन्तु यह बात दुनियावी समाज पर उचित बैठती है कि जिस आत्मिक अवस्था रूपी शहर का मैं निवासी हूं, उस शहर का नाम 'बेग़मपुरा' है, जहाँ कोई ग़म छू नहीं सकता। दुनिया का कोई दुख नहीं, चिंता नहीं और न ही कोई घबराहट है। वहाँ दुनिया वाली जायदाद नहीं, किसी का डर नहीं, किसी दूसरे-तीसरे का दर्जा नहीं अर्थात् मेर-तेर की कोई चिंता नहीं, सब एक समान हैं।

भक्त रविदास जी ने उत्तरी भारत की भक्ति परंपरा में महान योगदान दिया। आप जी की नम्रता और विलक्षण शख्सियत का प्रकटावा आपकी बाणी में से होता है। भक्त जी के संदेशों और उपदेशों ने भक्ति परंपरा में अपना अहम स्थान बना लिया है, जिसने धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषमताओं को दूर करने के लिए सर्वलोक को प्रेरणा दी है।

संदर्भिका :—

१. प्रो. दीवान सिंघ, भक्त रविदास दर्शन, पृष्ठ मुख बंद (भूमिका)।
२. डॉ. कुलदीप सिंघ धीर, नानक प्रकाश पत्रिका, भक्त-बाणी विशेषांक, दिसंबर २००६, पृष्ठ ८८.
३. इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड ऐथिक्स, भाग १०, पृष्ठ ३१३.
४. डॉ. कृष्णा कलसिया, गुरु रविदास जी का भक्ति मार्ग, पृष्ठ ३९२.

गुरु-पुत्री, गुरु-पत्नी और गुरु-माता : बीबी भानी जी

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

बीबी भानी जी एक ऐसी सौभाग्यशालिनी नारी हुई हैं जिनके पिता भी गुरु थे, पति भी गुरु थे और पुत्र भी गुरु बने। गुरु-पुत्री, गुरु-पत्नी और गुरु-माता होने का सौभाग्य मात्र बीबी भानी जी को ही प्राप्त हुआ। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी बीबी भानी जी के पिता थे। इसी प्रकार चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी बीबी भानी जी के पति थे और पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बीबी भानी जी के पुत्र थे। गुरु-इतिहास में ऐसा सौभाग्य किसी और नारी को नहीं मिला।

जन्म एवं बालपन : भाई कान्ह सिंघ नाभा कृत 'महान कोश' के अनुसार बीबी भानी जी का जन्म २१ माघ, १५९१ वि. अनुसार फरवरी, १५३५ ई. में हुआ। बीबी भानी जी की माता का नाम था— माता राम कौर (रामो) जी। यह वो समय था जब श्री गुरु अमरदास जी श्री अमृतसर जिले के गांव बासरके में रहते थे। इस तरह बीबी भानी जी का जन्म-स्थान बना गांव बासरके।

बीबी भानी जी से एक बड़ी बहन और थी, जिसका नाम बीबी दानी था। इसके अतिरिक्त बीबी भानी जी के दो भाई— बाबा मोहन और बाबा मोहरी थे। बीबी भानी जी भाई-बहनों में सबसे अधिक गंभीर, गुणवती, सेवाभाव वाली और आध्यात्मिक रुचियों वाली थीं।

बीबी भानी जी के बचपन के पहले पांच वर्ष गांव बासरके में ही बीते। बाद में श्री गुरु अमरदास जी सन् १५४० ई. में द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा में श्री खडूर साहिब आ गए। सन् १५५२ ई. में गुरुता की जिम्मेदारी मिलने पर तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी परिवार सहित श्री गोइंदवाल साहिब में आ विराजे।

बीबी भानी जी और भाई जेठा जी का अनंद कारज : अब बीबी भानी जी उन्नीस बरस की हो गई थीं। एक दिन माता राम कौर जी पति श्री गुरु अमरदास जी से बोले— ''अपनी बेटी 'भानी' बड़ी हो गई है। अब इसके लिए वर ढूंढना शुरू करें!'' माता राम कौर जी की बात सुनकर गुरु जी ने भोले-भाव से पूछा, ''लड़का कैसा चाहिए?''

सामने ही भाई जेठा जी सामने से गुजर रहे थे। सुंदर स्वरूप वाले भाई जेठा जी को देखकर माता जी ने सहज स्वभाव से ही कह दिया कि ''वर तो 'जेठे' जैसा ही होना चाहिए।'' श्री गुरु अमरदास जी ने यह सुनकर वचन किया— ''जेठे जैसा तो वह खुद ही है।'' इस प्रकार सन् १५५४ ई. में बीबी भानी जी का विवाह भाई जेठा जी के साथ हो गया।

बीबी भानी जी और भाई जेठा जी की गुरु-सेवा : भाई जेठा जी सात वर्ष की आयु में अनाथ हो गए थे, इसलिए भाई जेठा जी के नानी जी इन्हें अपने पास (ननिहाल) बासरके गांव ले आए। यह वही स्थान है जहां तीसरे पातशाह और बीबी भानी जी का जन्म हुआ था। परिवार की आर्थिक

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

जिम्मेदारियों में हिस्सा बँटाने के लिए भाई जेठा जी घुँघनियां बेचा करते थे।

भाई जेठा जी गोइंदवाल साहिब गए। वहां श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करके ऐसे प्रभावित हुए कि सदा के लिए गुरु-चरणों में ही रहने का निश्चय कर लिया। भाई जेठा जी ने गुरु-सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। भाई जेठा जी सुबह-सवेरे ही गुरु जी की सेवा में जुट जाते, फिर लंगर में सेवा करते और बाकी बचे समय में घुँघनियां बेचा करते।

बीबी भानी जी और भाई जेठा जी विवाह के बाद भी उसी समर्पित-भाव से गुरु-पिता की सेवा में रत रहे। कालान्तर में बीबी भानी जी के यहां तीन पुत्रों का जन्म हुआ— प्रिथी चंद, महादेव और (पंचम पातशाह) श्री गुरु अरजन देव जी।

बीबी भानी जी की गुरु-पिता के प्रति असीम सेवा : बीबी भानी जी बचपन से ही गुरु-पिता के प्रति असीम श्रद्धा-भाव रखते थे और सदैव पिता की सेवा में ही लगे रहते। बीबी भानी जी के विषय में प्रसिद्ध रहा है :

''भाउ भगति को तन जन भानी''

या

''सेवा निति करे''

या

''बैठी भानी देग सथाना''

भाई संतोख सिंह और ज्ञानी गिआन सिंह के अनुसार एक बार की घटना है कि बीबी भानी जी गुरु-पिता को स्नान करा रहे थे। श्री गुरु अमरदास जी एक चौकी पर बैठे स्नान कर रहे थे। अचानक बीबी भानी जी को प्रतीत हुआ कि चौकी का एक पाया टूटने वाला है। बीबी भानी जी ने तुरंत चौकी के उस पाये की जगह अपना हाथ रख दिया। बीबी भानी जी का हाथ आहत हो गया और उसमें से खून बहने लगा। गुरु जी पुत्री की इस सेवा-भावना से अत्यंत द्रवित हो उठे।

छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बीबी भानी जी के पौत्र थे, तो नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी पड़पोते। सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब जी और दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बीबी भानी जी के पोते के पोते थे और अष्टम बलबीरा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी थे— पोते के पोते के पुत्र। इनमें से पंचम पातशाह और नवम् पातशाह ने आत्म-बलिदान दिया और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो सारा वंश ही वार दिया।

श्री गुरु रामदास जी को पूर्ण सहयोग : सन् १५७४ ई. में सभी प्रकार से योग्य जानकर श्री गुरु अमरदास जी ने गुरुआई भाई जेठा जी को सौंप दी और स्वयं ज्योति-जोत समा गये। भाई जेठा जी चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी के रूप में गुरुता पर विराजमान हुए।

गुरु जी ने श्री अमृतसर नगर के विकास के लिए विशेष प्रयास किये। यह नगर पहले 'गुरु का चक्क' कहलाता था, जिसकी नींव सन् १५७४ ई. में रखी गई थी। फिर यहां सन् १५७७ ई. में 'अमृत सरोवर' का निर्माण-कार्य भी आरंभ हो चुका था।

गुरु जी ने श्री अमृतसर नगर के सर्वांगीण विकास के लिए ५२ व्यवसाय वाले लोगों को नगर में लाकर बसाया। बीबी भानी जी अपने गुरु-पति के हर कार्य में बढ़-चढ़ कर सहयोग करती रहीं।

सन् १५८१ ई. में जब चतुर्थ पातशाह ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व दोनों बड़े पुत्रों— प्रिथीचंद और महादेव को अयोग्य मानते हुए, गुरुता सबसे छोटे सुपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को

सौंपी तब बीबी भानी जी ने गुरु-पति के निर्णय का पूर्ण समर्थन किया।

श्री गुरु अरजन देव जी का गुरु-काल और बीबी भानी जी : श्री गुरु अरजन देव जी की बाल्यावस्था श्री गोइंदवाल साहिब में माँ बीबी भानी जी और नाना तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की देखरेख में बीती। पंचम पातशाह बचपन से ही आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे और गुरबाणी में गहरी रुचि व श्रद्धा रखते थे, इसलिए तीसरे पातशाह आपको 'दोहिता, बाणी का बोहिता' (अर्थात् 'नाती, बाणी का जहाज') कहा करते थे।

श्री गुरु अरजन देव जी ने सन् १५८६ ई. में अमृत सरोवर का निर्माण पूरा करवाया। सन् १५८८ ई. में गुरु जी ने अमृत सरोवर के मध्य श्री दरबार साहिब श्री हरिमंदर साहिब— अद्वितीय आध्यात्मिक स्थल की स्थापना करवाई। यही नहीं, सन् १५९६ ई. में तरनतारन साहिब और सन् १५९३ में करतारपुर नगर बसाया।

बीबी भानी जी ने गुरु-पुत्र के समस्त कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और उन्हें हर प्रकार का समर्थन दिया।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का बड़ा भाई प्रिथीचंद स्वयं गुरु बनना चाहता था, इसलिए वह गुरु-घर के विरुद्ध निरंतर षड्यंत्र रचता रहता था। बीबी भानी जी ने ऐसे समय में सदा अपने सच्चे सुपुत्र पंचम पातशाह का साथ दिया।

प्रिथीचंद की पत्नी करमो भी पंचम पातशाह की सुपत्नी माता गंगा जी के प्रति बड़ा ईर्ष्यालु व्यवहार रखती थी। कुछ समय बाद प्रिथीचंद के घर एक पुत्र मेहरबान का जन्म हुआ। अब उन्हें विश्वास हो गया कि बड़ा होने के कारण अब उनका पुत्र मेहरबान ही अगला गुरु बनेगा, इसलिए उन्होंने माता गंगा जी को और भी प्रताड़ित करना शुरू कर दिया।

१५ वर्ष बीत जाने के बाद भी माता गंगा जी की कोख सूनी ही रही। प्रिथीचंद और करमो के अत्याचार और बढ़ गए। ऐसे में बीबी भानी जी ने हमेशा ही माता गंगा जी का साथ दिया और उन्हें प्रोत्साहित किया। अंततः बाबा बुड्ढा जी की अरदास से माता गंगा जी को छठम पातशाह पुत्र-रूप में प्राप्त हुए।

बीबी भानी जी की लंगर-सेवा भी जगत्-प्रसिद्ध है। पंचम पातशाह के संपूर्ण गुरु-काल में बीबी भानी जी ही लंगर की व्यवस्था किया करते थे। बीबी जी ने लंगर-प्रथा को और अधिक सुदृढ़ता प्रदान की।

बीबी भानी जी का अकाल चलाणा : बीबी भानी जी सारा जीवन गुरु-घर के सिद्धांतों पर पहरा देते रहे। किसी भी प्रकार के पुत्र-मोह या सांसारिक मोह ने बीबी जी के कार्य में व्यवधान नहीं डाला। तीसरे पातशाह से लेकर छठम पातशाह तक सिक्ख धर्म का जो विकास-विस्तार हुआ, उसमें पुत्री, पत्नी, माता और दादी के रूप में बीबी भानी जी का योगदान अनमोल एवं अद्वितीय है।

बीबी भानी जी संवत् १६५५ विक्रमी अनुसार सन् १५९८ में लगभग ६४ वर्ष की आयु में गोइंवाल साहिब में अकाल चलाणा कर गए।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने माता बीबी भानी जी के सम्मान में तरनतारन साहिब में एक कुएं का निर्माण करवाया। आज यह 'बीबी भानी जी वाला खूह' (बीबी भानी जी का कुआं) कहलाता है।

सिक्ख पंथ की बड़ी त्रासदी : बड़ा घल्लूघारा

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

'घल्लूघारा' शब्द का एक अर्थ है— सब कुछ बर्बाद हो जाना, तहस-नहस हो जाना। इसका दूसरा अर्थ है— बड़े पैमाने पर लोगों का कत्ल कर देना। कत्ले आम (Genocide, Massacre, Mass Killing) को घल्लूघारा का पर्यायवाची माना जाना चाहिए। 'घल्लूघारा' शब्द का संबंध अफगानी बोली के साथ है।

पूरी की पूरी अठारहवीं सदी सिक्ख पंथ के लिए अति कठिनाइयों एवं मुश्किलों भरी रही है। इस सदी के दौरान सिक्खों ने जितनी कुर्बानियां दी हैं, उनका वर्णन करना मुश्किल है। दुख तो इस बात का भी है कि असंख्य ऐसे गुमनाम सिक्ख शहीद हुए हैं, जिनके नाम आज तक हमें मालूम नहीं।

सिक्ख इतिहास में अठारहवीं सदी में घटित दो घल्लूघारे और बीसवीं सदी में सन् १९८४ में स्वतंत्र भारत में घटित 'तीसरा घल्लूघारा' प्रसिद्ध हैं। प्रथम घल्लूघारा— सन् १७४६ ई. में सिक्खों का नामोनिशान मिटाने हेतु याहिया खान व लखपत राय ने सिंघों का पीछा अपनी पूरी ताकत के साथ किया और जिला गुरदासपुर के कसबा काहनूंवान में तथा इसके साथ सटे क्षेत्र में हज़ारों सिंघों को शहीद किया। इस त्रासदी को 'छोटा घल्लूघारा' कहा जाता है। 'बड़ा घल्लूघारा' इसके सोलह वर्ष बाद सन् १७६२ ई. में घटित हुआ। उस वक्त जालिम व क्रूर शासक अहमद शाह अब्दाली ने मालेरकोटला के निकट सिंघों पर हमला किया और दस हजार से अधिक सिंघों को शहीद कर दिया। गहरे सदमे की हालत बन गई।

अहमद शाह अब्दाली ने पंजाब प्रांत तथा भारत के अन्य क्षेत्रों पर जब आक्रमण शुरू किए थे, उस समय गुरु के सिंघ भी पंजाब में अपनी स्थिति व ताकत मजबूत कर चुके थे। सिक्खों की बारह मिसलों (जत्थेबंदियों) पर आधारित सत्ता पंजाब प्रांत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कायम हो चुकी थी। लुटेरे व कातिल अब्दाली का रास्ता रोकने एवं उसकी शक्ति को चुनौती देने वाली अन्य कोई ताकत थी नहीं। सिंघों ने कई बार उसका मुकाबला किया। उसके सेनापतियों को भगाया और उसके द्वारा नियुक्त किए शासकों को मात दी।

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन: ९८७२२-५४९९०*

अब्दाली सिक्खों के विरोध एवं विद्रोह से दुखी व परेशान हो उठा। उसके पांच हमलों को सिंघों ने नाकाम करके रख दिया और उसे वापिस चले जाने पर विवश कर दिया। उसके लौट जाने के बाद शूरवीर सिंघ उसके कर्मचारियों के प्रबंध को नेस्तनाबूद कर देते।

सन् १७६२ ई. के आरंभ में जब अहमद शाह अब्दाली छठी बार भारत पर आक्रमण करने के लिए आया, तब अपने गुप्तचरों द्वारा सिंघों को पता चल गया कि वह इस बार बहुत बड़ी तैयारी के साथ आ रहा है। इस बार उसका सरे-मैदान मुकाबला करना कठिन है। पंजाब के उसके चापलूस कर्मचारियों व चौधरियों ने रोहतास में उसके साथ विशेष चर्चा की और सिंघों के विरुद्ध उसे खूब भड़काया। सिंघों को यह भी पता चल चुका था कि इस बार वह सिक्खों के बच्चों तथा औरतों का भी कत्लेआम करेगा, इसलिए इन्हें उसके जुल्म से बचाना चाहिए। सिंघ अपने परिजनों सहित माझा क्षेत्र को छोड़ दरिया सतलुज के पार दूर मालवा क्षेत्र में पहुंच रहे थे, अपने परिजनों को सुरक्षित जगह पर बसाने के लिए।

इधर सिंघ मालेरकोटला के करीब के गांवों में थे, उधर भीखण खान व सरहिंद के सूबेदार को बुलावा भिजवाकर अहमद शाह अब्दाली ३ फरवरी, १७६२ ई. को लाहौर से भारी सेना लेकर चल पड़ा। मुलतान, लाहौर तथा अन्य क्षेत्रों के प्रमुखों की सेनाएं भी उसके साथ हमले हेतु चल पड़ीं। मात्र दो दिनों में गुस्साया अब्दाली तेजी से यात्रा खत्म कर मालेरकोटला के करीबी गांव कुप्प में पहुंच गया। यहीं नजदीक ही ३० हजार सिंघ अपने परिवारों एवं सामान के साथ ठहरे हुए थे। इन सभी सिंघों पर एक ओर से अब्दाली की सेना ने तथा दूसरी ओर से सरहिंद के सूबेदार जैन खान की सेना ने एक साथ हमला कर दिया। अब्दाली ने तो अपनी सेना को यह आदेश तक दे दिया था कि पंजाबी पहनावे में नजर आते प्रत्येक व्यक्ति को मार दिया जाए। जैन खान से कहा गया कि वह अपने सैनिकों की पगड़ियों पर हरे रंग की पट्टियां बंधवा दे, ताकि वे भी न मारे जाएं। इस स्थान पर कई हजार सिंघों, औरतों तथा उनके बच्चों को एक साथ शहीद कर दिया गया।

यह हमला अचानक हुआ था। सिंघों के प्रमुखों ने उसी समय एक संक्षिप्त बैठक की और निर्णय लिया गया कि शत्रुओं के आगे समर्पण नहीं करना है, युद्ध में लड़ते-लड़ते शहीद हो जाना है। सिंघों ने अपने बाल-बच्चों एवं अन्य परिजनों के इर्द-गिर्द सुरक्षा-घेरा बना लिया तथा चारों ओर से हो रहे हमले का साहसपूर्वक सामना करने लगे। इस समय सिंघों का नेतृत्व स. जस्सा सिंघ

आहलूवालिया, महाराजा रणजीत सिंघ के दादा स. चढ़त सिंघ शुकरचक्किया और करोड़सिंघिया मिसल के स. शाम सिंघ कर रहे थे। योजना यह थी कि लड़ते-लड़ते एक दिशा में बढ़ते चलें और किसी तरह दुश्मनों का घेरा तोड़ कर बरनाला पहुँचा जाए। वहां से महाराजा बाबा आला सिंघ से सिंघों को सहायता मिल जाने की आशा थी। लड़ते-लड़ते गांव-दर-गांव आगे बढ़ते गए। सिंघ कुतब बामणी गाहल नामक स्थान पर पहुंच गए। इन गांवों के वासियों ने मुश्किल में घिरे सिंघों की मदद करने की अपेक्षा अब्दाली का भय मानते हुए सिंघों पर ही हमला कर दिया। यहां पर हमारे योद्धा सिंघों का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। फिर भी गुरु के सिंघों ने हिम्मत नहीं हारी और चारों ओर से हो रहे हमले का मुकाबला करते चले गए। जब बाकी हथियार नष्ट हो गए तब उन्होंने केवल अपनी कृपाणों से मुकाबला करना जारी रखा। इस झड़प में दस हज़ार से अधिक सिंघ शहीद हो गए। इसी लड़ाई में सिंघों से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का वह पावन स्वरूप गुम हो गया, जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री दमदमा साहिब में स्वयं तैयार करवाया था।

प्रसिद्ध सिक्ख लेखक एवं इतिहासकार (दिवंगत) ज्ञानी भजन सिंघ अपनी पुस्तक 'हमारे शहीद' में वर्णन करते हुए लिखते हैं कि इस झड़प में वही बच सका था, जो बठिंडा के आगे राजस्थान के जिला बीकानेर के मारुस्थल में चला गया था। सिक्ख समुदाय का इससे पहले व्यापक स्तर पर सामूहिक रूप से इतना ज्यादा नुकसान नहीं हुआ था, जितना सन् १७६२ ई. के इस घल्लूघारे में हो गया था। शूरवीर, निर्भीक और जांबाज सिंघों का यह अदम्य साहस ही था कि किसी एक ने भी आत्मसमर्पण नहीं किया, झुकना स्वीकार नहीं किया, बल्कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाना ही शिरोधार्य किया। ऐसे लाजवाब जज्बे ने ही हमारी कौम को बड़े से बड़े संघर्षों में जीत दिलाई और 'खालसा राज' की स्थापना हुई।

उस समय जितने भी थोड़े-से सिंघ बचे थे, उन्होंने 'राज करेगा खालसा' का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु जद्दोजहद (संघर्ष) जारी रखी और पुनः दिखा दिया कि कोई भी ताकत या सत्ता सिक्खों का नामो-निशान नहीं मिटा सकती, उनके हौसले पस्त नहीं कर सकती।

सभराउं की जंग

*– ज्ञानी सोहन सिंघ सीतल (दिवंगत) **

जंग अलीवाल : २८ जनवरी, १८४६ ई. बद्दोवाल की लड़ाई में अंग्रेज़ बुरी तरह से हारे थे। इस कारण हैरी स्मिथ की बहुत बदनामी हो रही थी। हैनरी हैरी स्मिथ हार्डिंग का पुराना मित्र था। वह किसी बहाने अपने दोस्त की बदनामी का दाग धोना चाहता था। हैरी स्मिथ २८ जनवरी, १८४६ ई. को नयी सजी फ़ौज लेकर लुधियाना से वापिस लौट रहा था। अलीवाल के पास उसे सिक्खों का एक दस्ता नज़र आया। शायद यह स. रणजोध सिंघ की फ़ौज का दस्ता था, जो सभराउं की तरफ जा रहा था। हैरी स्मिथ ने उन गिनती के सिक्खों पर पूरी फ़ौज के साथ धावा बोल दिया। सिक्ख संख्या में बहुत कम थे। मामूली झड़प के बाद वे दरिया सतलुज की तरफ चले गए। इतनी-सी घटना को सरकारी रिपोर्ट लिखने वालों ने 'अलीवाल की घमासान जंग' और 'हैनरी हैरी स्मिथ की शानदार विजय' लिख दिया। डॉक्टर एंड्रयू एडम्स अपनी पुस्तक में इसे केवल 'चिट्ठी-पत्र की लड़ाई' कहता है।

राजा गुलाब सिंघ वज़ीर बना

इन्हीं दिनों सिक्खों ने एक और भूल कर दी। राजा गुलाब सिंघ (डोगरा धिआन सिंघ का बड़ा भाई) को जम्मू से बुला लिया। २७ जनवरी को वह तीन हज़ार डोगरा फ़ौज सहित लाहौर आ गया। सिक्ख राज के पुराने दुश्मन को पंजाब का वजीर बना दिया। उसकी भी लंबे समय की उम्मीदों को फल लगने का समय आ गया। वह सरदार जवाहर सिंघ के समय से ही अंग्रेज़ों के साथ पत्र-व्यवहार कर रहा था कि अगर अंग्रेज़ उसे पहाड़ी इलाके का स्वतंत्र महाराजा मान लें, तो वह पंजाब लेने में अंग्रेज़ों की मदद करने को तैयार है। फिर १८४५ ई. के नवंबर माह के आरंभ में उसने अंग्रेज़ों की तरफ आदमी भेजा कि ''सिक्ख लड़ाई करने पर तुले हुए हैं। मैं दिल से आपकी तरफ हूं और ज़रूरत पड़ी तो आपकी मदद करूँगा।''

बताइए, ऐसे व्यक्ति से भलाई की क्या उम्मीद हो सकती है! चार्ल्स गफ ने इसकी बहुत उपयुक्त तस्वीर खींची है। वह लिखता है— ''इसमें कोई संदेह नहीं कि गुलाब सिंघ बहुत लायक व्यक्ति था, जैसा उसका भाई धिआन सिंघ बुद्धिमान था। यह भी बिलकुल स्पष्ट है कि गुलाब सिंघ पत्थर-दिल और

निजी स्वार्थी हाकिम था। वह ऐसा व्यक्ति था कि ज़मींदार की आख़िरी कौड़ी भी अपनी जेब में डाल लेता और शत्रु को रास्ते में से काँटे की तरह निकाल देता। उसे तनिक दया न आती। जब तक वह किसी के साथ वफ़ादार रहने में अपना लाभ समझता, तब तक उसकी वफ़ादारी भरोसेयोग्य थी। ये बुरी आदतें कई देसी सरदारों में थीं, लेकिन उसकी इन आदतों पर उसकी बुद्धिमता ने पर्दा डाल रखा था। कहा जाता है कि वह रहमदिली और खुलदिली के लिए तैयार हो जाता, यदि वह सोचता कि दयावान और उदार होने में उसका व्यक्तिगत लाभ है। अंग्रेज़ों के साथ वफ़ादारी पर भरोसा किया जा सकता था, क्योंकि वह जानता था कि इस वफ़ादारी में ही लाभ था। ज्यादा दबाव डालने से वह बेवफ़ा भी हो सकता था। पंजाब में ऐसा और कोई व्यक्ति नहीं था, जो इतनी जल्दी बेवफ़ा हो सके। कहा जा सकता है कि उसका काम करने का ढंग समझदारों जैसा था, जबकि दूसरों का व्यवहार चालाकी भरा था।''[3] ऐसे कर्मों के मालिक गुलाब सिंघ को पंजाब का वज़ीर बनाया गया।

अलीवाल की लड़ाई के कुछ दिन बाद लाल सिंघ और तेज सिंघ, सिक्ख फ़ौज सहित पूरबी दिशा से दरिया पार कर गए। उस समय अंग्रेज़ों की हालत बहुत ख़राब थी। उनके पास कुछ भी जंगी सामान नहीं था। फ़ौज इधर-उधर बिखरी पड़ी थी। अगर सिक्ख जरनैल दिल्ली से आने वाला सामान लूट लेते और अस्त-पस्त अंग्रेज़ों की फ़ौज पर हमला कर देते, तो अंग्रेज़ों की पराजय अवश्य होती। परन्तु यह बात सिक्खों के देशद्रोही जरनैल नहीं चाहते थे।

राजा गुलाब सिंघ की वज़ारत (हुकूमत) सिक्खों के लिए 'डूबते को तिनके का सहारा' वाली बात थी। अगर वह चाहता, तो इस लड़ाई को लम्बा खींच सकता था, परन्तु इसमें उसे कोई लाभ नहीं था। अंतत: वह सभराउं पहुँचा। पहले उसने पराजित फ़ौज को बुरा-भला कहा कि उसने ताकतवर पड़ोसी के साथ लड़ाई क्यों शुरू की है ? फिर अंग्रेज़ों के साथ सौदेबाज़ी शुरू कर दी। गवर्नर जनरल यह देखकर बहुत खुश हुआ कि सिक्ख आफिसर संधि के लिए राज़ी हैं, क्योंकि वह (गवर्नर जनरल) जानता था कि पंजाब पर विजय प्राप्त कर लेना आसान नहीं। अगर सिक्खों को अब भी कोई लड़ाने वाला होता और दरिया के इस पार श्री अमृतसर, लाहौर, मुलतान आदि किलों में एक-एक जगह सिक्ख जम कर लड़ते, तो यह जंग बहुत लम्बी हो जाती और उसके नतीजे की बाबत कुछ भी कहना कठिन होता। बद्दोवाल की अधूरी विजय ने हिंदुस्तान के शहज़ादों

के दिमाग़ में और ही ख़्याल पैदा कर दिए थे, अत: इस लम्बी जंग का प्रभाव पड़ना भी ज़रूरी था।

सिक्खों और अंग्रेज़ों के नेता इस जंग को जल्द ख़त्म करना चाहते थे। राजा गुलाब सिंघ और लार्ड हार्डिंग में एक गुप्त समझौता हो गया। ''अंग्रेज़ों ने गुलाब सिंघ को पता कर दिया कि वे लाहौर में सिक्खों की बादशाही मानने को तैयार हैं, लेकिन सिक्ख नेता पहले अपनी फ़ौज को बे-हथियार कर दें। राजा ने फ़ौज के साथ ऐसा व्यवहार करने से अपने आपको असमर्थ प्रकट किया, क्योंकि ख़ालसा फ़ौज उस (गुलाब सिंघ) पर और रणजीत सिंघ के अन्य शुभचिंतकों पर गहरा प्रभाव रखती थी। इस मजबूरी को उसने निजी स्वार्थ के लिए बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताया। बदले हुए हालात में बर्तानवी शोहरत को कायम रखने के लिए लाहौर के साथ अहदनामा करना ज़रूरी था। दोनों पक्षों ने यह गुप्त फ़ैसला किया कि अंग्रेज़ सिक्ख फ़ौज पर हमला करें और जब वह हार जाए, तो लाहौर दरबार एलानिया हारी हुई फ़ौज को निकाल दे। सतलुज के रास्ते में कोई रुकावट न हो और लाहौर वाली सड़क विजेता अंग्रेज़ों के लिए खुली हो। इस तरह कूटनीति और बेशर्मी के जाल में फंस कर सभराउं की लड़ाई लड़ी गई।''

नेताओं की बदनीयती के कारण पहली चार लड़ाइयों में सिक्ख फ़ौज कुछ कट मरी, कुछ सिपाही घायल हुए और कुछ भाग कर श्री अमृतसर जा पहुंचे। जो बाकी बचे, वे मिल-मिला कर २० हज़ार के लगभग फतहगढ़ के मैदान में आ इकट्ठा हुए। यहाँ दरिया के बांये किनारे पर सिक्खों ने कच्चा किला बनाया। यह मोर्चा आधे चांद के आकार में दरिया के साथ-साथ लंबाई में था, जिसका मध्य भाग दक्षिण में दुश्मन की दिशा की तरफ उभरा हुआ था। पहली लड़ाइयों की तरह सिपाहियों ने सब कुछ किया, परन्तु जरनैलों ने कुछ भी न किया। सिक्खों के पास दो सौ ज़म्बूरके और ६७ तोपें शेष बची थीं। ज़म्बूरके मोर्चे के अगले हिस्से में दुश्मन द्वारा लगाए गए थे और दूर तक मार करने वाली प्राणघातक तोपें दरिया के पिछले किनारे पर कच्चे चबूतरों पर थीं। मध्य में नाव का पुल बंधा हुआ था, जिसकी रक्षा तेज सिंघ की फ़ौज कर रही थी। इस प्रकार मोर्चाबन्दी कर सिक्ख मर-मिटने की ठान कर अंग्रेज़ों का इन्तज़ार कर रहे थे।

स. शाम सिंघ अटारी वाला जंग की खबरें रोज़ सुनता रहता था। मुदकी और फेरू शहर की हार उसके सीने में काँटे की तरह चुभ रही थी। उधर से महारानी जिंद कौर की चिट्ठी पहुँची, जिसने बिना आग के लपटें पैदा

कर दीं। चिट्ठी में दोनों लड़ाइयों का विवरण और खालसा फ़ौज की हार के कारण स्पष्ट लिखे हुए थे :

चिट्ठी लिखी महाराणी ने शाम सिंघ नूं,
''बैठ रिहों की चित्त विच धार सिंघा!
दोवें जंग 'मुदकी', 'फेरू शहर' वाले,
सिंघ आए अंग्रेज़ां तों हार सिंघा!
काहनूं हारदे, किउं मिहणे जग्ग देंदा?
जिऊंदी हुन्दी जे अज्ज 'सरकार' सिंघा!
तेग सिंघां दी तां खुंढी नहीं हो गई,
ऐपर आपणे हो गए गद्दार सिंघा!
देश-द्रोही वजीर, जरनैल रल के,
वेख कौम दा मुल्ल की पा रहे ने!
चाईं-चाईं गुलामी दीआं बेड़ीयां पा,
उह पंजाब दी अणख मिटा रहे ने।
हुण वी चमकी ना जे सिंघा! तेग तेरी,
तां फिर सारे निशान मिटाए जासन।
तेरे लाडले कौर दी हिक्क उत्ते,
कल्ह नूं ग़ैरां दे झंडे झुलाए जासन।
पुट्ट शेरे-पंजाब दी मढ़ी ताईं,
उहदे पैरां विच फुल्ल रुलाए जासन।
बदली जिन्हें तकदीर पंजाब दी सी,
उहदी आतमा नूं तीर लाए जासन।
अजे समां हई वक्त संभाल सिंघा!
रुढ़ी जांदी पंजाब दी शान रक्ख लै!
लहिंदी दिस्से 'रणजीत' दी पग्ग मैनूं,
मोए मित्तर दी योधिआ! आन रक्ख लै!''

चिट्ठी पढ़ी तां दिल 'च भूचाल आया,
किसे रोह विच आण सरदार उठिया।
चढ़िआ खून नेत्र लालो लाल होए,
लै के हत्थ विच नंगी तलवार उठिया।
सौंदे जांदे पंजाब दे भाग ताईं,
टुंबण वास्ते शेर ललकार उठिया।
कांटा बुरी तकदीर दा बदलणे नूं,
कौमी अणख दे ताईं वंगार उठिया।
कोल सद्द के किहा सरदारनी नूं,
''लै म्यान आह उच्ची लटका छड्डीं!
किसे जिंदा जरनैल दी याद है इह,
इहनूं दाग ना लग्गे, समझा छड्डीं!
मरदी कौम विच जिंदगी भरन ख़ातर,
मैं हुण देस तों होण कुर्बान चल्लिआ।
जिहड़े कौमी ग़द्दारां ने दाग लाए,
धो के खून दे नाल मिटाण चल्लिआ।
जिहड़े देस-द्रोहियां ने लाए लांबू,
छट्टे रत्त दे मार बुझाण चल्लिआ।
पिच्छों होऊ, सो वेखेगा जग्ग सारा,
मैं तां आपणी तोड़ निभाण चल्लिआं।
ना मैं होवांगा, ना इह पंजाब होसी,
ऐपर दिलां विच दोहां दी याद रहिसी।
'सीतल' सूरज कुर्बानी दा चमकदा रहू,
जदों तीक इह देस आबाद रहिसी।''

अन्य जागीरदार अधिकारियों की तरह सरदार शाम सिंघ के पास भी अपनी निजी

फ़ौज थी। वह देश की आज़ादी को बचाने के लिए आख़िरी यत्न करने के लिए, अपने मुट्ठी भर योद्धाओं को साथ लेकर सभराउं के मैदान की ओर चल पड़ा।

राजा गुलाब सिंघ के साथ हुए गुप्त समझौते के कारण दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ों के हौसले बहुत बढ़ गए थे। ७ फरवरी को दिल्ली से नया जंगी सामान, बड़ी तोपें, जिन्हें हाथी खींचते थे और कुछ सज्जरसाह (नयी सजी) फ़ौज आ गई। ८ फरवरी को हैरी स्मिथ भी गफ को आ मिला। उन्होंने नये हमले की तैयारी कर दी। ९ फरवरी का सारा दिन उन्होंने तैयारी करते हुए निकाल दिया। सारी फ़ौज को तीन हिस्सों में बांटा— गिलबर्ट की फ़ौज मध्य में, सर राबर्ट डिक बांयी तरफ, हैरी स्मिथ दायीं तरफ। फ़ौज की संख्या कईयों ने तो मात्र १५ हज़ार लिखी है और कईयों ने १५ हज़ार पैदल, १० हज़ार रसाला तथा १२० तोपें लिखी हैं।

७ फरवरी को लाल सिंघ का निकल्सन तक गुप्त चिट्ठियाँ पहुंचाने वाला नौकर नूरदीन पठान कसूरी अंग्रेज़ों के पास चिट्ठी लेकर पहुँचा। इस चिट्ठी में लाल सिंघ ने सिक्खों के किले (मोर्चे) का नक्शा दिया और लिखा था— ''इस लड़ाई का सेनापति तेज सिंघ है, परंतु इसमें कोई हर्ज नहीं। वह अपने वचन पर पक्का है और वित्त अनुसार अंग्रेज़ों का भला करने का यत्न करेगा। मेरे हाथ में रसाला है और मैंने उसे इधर-उधर फैला दिया है। साथ ही सिक्खों के मोर्चों की दक्षिणी दिशा बहुत कमज़ोर है। उधर की दीवार कमज़ोर बनी हुई है।''[६]

और सुनो— ''कलकत्ता रिव्यू, (जून, १८४९ ई., पृष्ठ ५४९) चाहे लाल सिंघ और तेज सिंघ की गद्दारी पर शक करता है, परन्तु फिर भी मानता है कि लाल सिंघ न केवल निकल्सन के साथ पत्र-व्यवहार कर रहा था, बल्कि ७ फरवरी, १८४६ ई. को ख़्याल है कि उसने सभराउं में सिक्खों के मोर्चे का नक्शा लारेंस को भेजा। १९ दिसंबर, १८४५ ई. को मुदकी की लड़ाई के अगले दिन लाल सिंघ का एजेंट ब्राडफुट के पास आया, जो डांट-फटकार कर निकाल दिया गया। तेज सिंघ की गद्दारी के बारे में एक मानने वाली रिवायत के अनुसार कहा जा सकता है कि उनकी तोपों का बारूद छेड़ा गया और बहुत सारा नकारा कर दिया गया है।''[७]

अब भी लाल सिंघ और तेज सिंघ के नमक-हरामी होने पर कोई शक है ? जहाँ ऐसे कुल-घातक नेता हों, वहाँ अन्य दुश्मनों की क्या ज़रूरत है ?

१० फरवरी, १८४६ ई. का सूर्य अभी उदय होने वाला था कि अंग्रेज़ों ने अपनी तोपों को आग दिखा दी। सामने से जवाब में

सिक्खों ने भी गोले दागे। दोनों तरफ से आग बरसने लगी। तीन घंटे तक लगातार गोले बरसते रहे, परन्तु कोई पक्ष भी पीछे न हटा। पिछली चार लड़ाइयों में अंग्रेज़ सिक्ख सिपाहियों की बहादुरी देख चुके थे। सिक्खों का प्रभाव गोरा फ़ौज पर और देसी फ़ौज दोनों के दिलों पर बैठा हुआ था। गफ ने चार पल्टनें (दसवीं पैदल, ऊँट-पालकों की तिरपनवी पैदल, तेतालीसवीं देसी और उन्चासवीं देसी, समेत तोपख़ाना) नयी, जो पहले किसी लड़ाई में सिक्खों के विरुद्ध नहीं लड़ी थीं— सिक्खों पर हमला करने के लिए तजवीज़ कीं। सर राबर्ट डिक्क ने ये चारों पल्टनें लेकर लाल सिंघ के बताए मुताबिक दक्षिणी हिस्से पर हमला किया। तोपों की मार ने एक हिस्से में दरार डाल दी। गुस्से में सिक्खों ने वो आग बरसाई कि राबर्ट डिक्क को ज़ख्मी होकर पीछे लौटना पड़ा। सिक्खों ने वह मोर्चा फिर पक्का कर लिया। अंग्रेज़ बार-बार हमला करते और ख़ालसा फ़ौज की फ़ौलादी दीवार के साथ टक्कर खाकर वापिस लौटते। इस समय लाल सिंघ अपनी फ़ौज सहित अकारण ही भाग गया। थोड़ी देर बाद तेज सिंघ भी अपनी छः हज़ार फ़ौज के साथ भाग उठा और जाता-जाता बारूद से भरी नौका दरिया में डुबो गया। जो पुल सिक्खों ने दरिया पर बांधा था और जिसकी सुरक्षा तेज सिंघ कर रहा था, वह उसमें से दो नौका डुबो कर पुल भी तोड़ गया।

जरनैलों से विहीन फ़ौज घबरा उठी। लड़ने वाले थे, परन्तु लड़वाने वाला कोई नहीं था। इतने में तोपचियों की तरफ से चारों ओर दुहाई मच गई कि नई पेटियाँ खोलने पर उनमें से बारूद की जगह रेत और सरसों निकलती है।

अब क्या किया जाए? सामने वाली दिशा के ज़म्बूरके खाली पड़े थे। बंदूकचियों को बारूद मिलना बंद हो गया था। दरिया की पिछली तरफ़ तैनात की गई लंबी दूरी तक मार करने वाली तोपों के गोले अंग्रेज़ फ़ौज के ऊपर से अगली तरफ़ जाकर गिरते थे, क्योंकि उन तोपों को चलाने वाले मुसलमान थे, जो तोपों का मुँह ऊँचा कर चलाते थे, ताकि दुश्मन का कोई नुकसान न हो। अंत में ये तोपें भी धीरे-धीरे चलनी बंद हो गईं।

इतने में विरोधी फौज दो-तीन जगह से सिक्खों के मोर्चे में दाख़िल हो गई। सिक्ख भी बिखरने लगे। बिलकुल उसी समय सरदार शाम सिंघ अटारी वाला मैदान में पहुँच गया। सफ़ेद नूरानी दाढ़ी, सफ़ेद पोशाक में सजा हुआ वह सफ़ेद घोड़े पर शोभा दे रहा था। वह मोर्चे की हालत देख कर हैरान रह गया। शहादत के बिना अन्य सभी दरवाज़े बंद हो चुके थे। वह कौमी परवाना, आत्मसम्मान का पुतला, खालसा फ़ौज को मर-मिटने के लिए

इस प्रकार ललकारने लगा :

शाम सिंघ तलवार लिशकांवदा,
विच खला ए दलां दे आ।
कहिंदा, होश सँभालो ख़ालसा!
क्यों चल्ले जे सिक्खी नूं दाग़ ला?
किहड़े शौक नूं सी तेगां चुक्कीआं,
अंत नस्सणा सी कंड जे विखा?
ताहने देंवदी है रूह 'रणजीत' दी,
हार आए दुशमनां तों खा।
हत्थीं पाइके गुलामी दीआं बेड़ियां,
जिउंदे रहोगे की अणख गुआ?
तुसीं पुत्तर गुरु गोबिंद सिंघ दे,
दीप सिंघ दे हो वीर भरा!
जिन्हें कटक दुरानियां दे मार के,
शान सिक्खी वाली लई सी बचा।
उट्ठो सूत लो भगौतियां सूरिओ,
दिओ वैरीआं दे सत्थर विछा!
शान ख़ालसे दी नाल पंजाब दे,
किते दोवें ही ना बिहो जे लुटा!
मरना देश लई भला है 'सीतला',
लवो मरतबे शहीदी पा!

सरदार शाम सिंघ को देख कर सिपाहियों में नयी जान आ गई। घबराए हुए सिपाही फिर मर-मिटने के लिए तैयार हो गए। अफ़सोस! इनका यह जोश और कोशिश किसी लेखे में नहीं थी, क्योंकि बारूद बिलकुल ख़त्म हो चुका था और नई पेटियों में से बारूद की जगह तेज सिंघ की गद्दारी की वजह से सरसों और रेत निकल रही थी। अब सिक्ख फ़ौज के लिए दो रास्ते रह गए थे— या तो कायरों की तरह दुश्मन के आगे हथियार डाल दें या मैदान में कट मरें। विजय की आशा खत्म हो गई थी। शाबाश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नादी सुपुत्रों के! चारों तरफ से दुश्मन की संगीनों और बंदूकों से घिरे होने के बाद भी किसी सिक्ख ने हथियार डाल कर प्राणों की भिक्षा नहीं माँगी, बल्कि हर बार शत्रु का मुकाबला करते रहे।

सरदार शाम सिंघ ने ललकार कर कहा— ''खालसा जी! अब समय है कि आप गुरु महाराज जी के अमृत की शक्ति दिखाओ! मृत्यु आपके सामने मुँह फैलाए खड़ी है! पिछली तरफ़ ख़ूनी दरिया और सामने काल का रूप— दुश्मन की तोपें हैं। तोपें और बंदूकें बारूद के बिना बेकार पड़ी हैं। अब तो पक्की दोस्त— कलगीधर पातशाह द्वारा प्रदत्त तेग ही बाकी है। शेरो! सावधान हो जाओ और दुश्मन के ग़ुलाम बन कर जीने से अच्छा कि मर्दों की मौत मरो और देश की ख़ातिर शहीद होकर सचखंड जाओ!''

सामने से खालसा फ़ौज ने 'सति श्री अकाल' के जयकारों से आसमान गुंजा दिया। सिक्ख सिपाही तेग निकाल कर मर-मिटने के लिए तैयार हो गए। सरदार शाम सिंघ ने ५०

नंबर पलटन पर हमला बोल दिया :

शाम सिंघ सरदार आ, रण अंदर वड़िआ।
चिहरा सूहा दमकदा, खून अक्खीं चड़िआ।
फरकण डौले शेर दे, हत्थ खंडा फड़िआ।
गज्जदा दुश्मन फौज दे आ साहवें खड़िआ।
हत्थो-हत्थी चाहुंदा, वैरी नाल लड़िआ।
(उस) भेट चढ़ाया तेग दी, जो अग्गे अड़िआ।
शाम सिंघ सरदार ने, हत्थ फड़ी भवानी।
लिशक डरावे वैरियां, बिजली असमानी।
फेर दुर्हाईं चाहुंदा, जग विच कहानी।
सुट्टे सी ज़िउं 'दीप सिंघ', कर घायल दुरानी।
वध-वध तेग़ां मारदा, 'अरजन' दा सानी।
भाले खंडे धार चों, नित दी ज़िंदगानी।
उस बुढ्ढे जरनैल 'ते, मुड़ चढ़ी जवानी।
ढाडी वारां गाउणगे, जग्ग रहू नशानी।

सिक्ख फ़ौज के इस हमले ने अंग्रेज़ पलटनों की इस रणनीति को ध्वस्त कर दिया। उनकी कतारें तोड़ दीं और पैर उखाड़ दिए। तत्पश्चात अंग्रेज़-तोपों ने और ज़ोर से आग बरसायी । अंग्रेज़ फ़ौज ने संगीनों से सिक्खों पर हमला किया। इस समय सरदार शाम सिंघ ७ गोलियाँ खाकर घोड़े से नीचे गिरे। वे आज़ादी के पुजारी और कुर्बानी के देवता शहीद होकर सचखंड जा बसे। उनके साथ ही सरदार मेवा सिंघ और सरदार जैमल सिंघ निहंग भी शहीद हुए।

सरदार शाम सिंघ के शहीद हो जाने से खालसा फ़ौज के हौसले टूट गए। तोपों और बंदूकों के सामने कृपाणें कब तक ठहर सकती थीं! सिक्ख फ़ौज में भगदड़ मच गई। जिस तरफ़ किसी का मुँह हुआ, भाग खड़ा हुआ। भागते हुए सिक्खों की कृपाणें भी शत्रु के लहू में डूबे बिना नहीं रहती थीं।

इस समय यहाँ का नज़ारा देख कर दिल दहल जाता था। तीन-चार मील लम्बे-चौड़े क्षेत्र में लाश पर लाश पड़ी थी। सारी धरती लहू-लुहान थी। कहीं किसी सिक्ख के केश बिखरे पड़े थे और कहीं किसी गोरे की खोपड़ी पड़ी थी। सतलुज का पानी लहू के रंग का होकर बह रहा था और बीच में मछलियों की तरह सिक्खों की लाशें तैर रही थीं। अंग्रेज़ फ़ौज के अहंकारी सिपाही पानी में बह रहे ज़ख्मी सिक्खों को गोलियों का निशाना बना रहे थे। कुछ सिक्ख मैदान में शत्रु की गोलियों का निशाना बन गए, कुछ दरिया में बह गए। जो बचे, वे श्री अमृतसर जा इकठ्ठा हुए। अफ़सोस, अगर कहीं लाल सिंघ, तेज सिंघ और गुलाब सिंघ डोगरा सिक्खों के साथ गद्दारी न करते, तो . . . ।

१० फरवरी दोपहर तक अंग्रेज़ों ने पूरी तरह से विजय हासिल कर ली। सिक्खों की ६० तोपें और २०० ज़म्बूरके विजेताओं के हाथ आए। इस लड़ाई में अंग्रेज़ों के १३ बड़े

आफिसर मरे और १०१ जख्मी हुए। कुल नुकसान ३२० आदमी मरे और २०६३ जख्मी हुए। सिक्खों के नुकसान का उचित अंदाज़ा कौन लगाता? क्या उन जरनैलों ने पड़ताल करनी थी, जो फ़ौज को मौत के मुँह में धकेल कर खुद घरों मे जा घुसे थे? सिक्खों के नुकसान का अंदाज़ा लेखकों ने ५ और ८ हज़ार में दिया है।

सतलुज की लड़ाई में सिक्ख हार गए। मगर हारे क्यों? इसका उत्तर बहुत-सा आप पढ़ चुके हो और कुछ दलीलें मैं नीचे लिखता हूं। सिक्ख सिपाहियों के चलन और सेनापतियों की करतूत के बारे में कई लेखकों ने इस प्रकार लिखा है :—

मैकग्रेगर अपनी किताब में जगह-जगह पर लिखता है (पृष्ठ ५१)— ''यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सिक्ख प्राकृतिक रूप से 'सिपाही' है। वह और किसी नौकरी की परवाह नहीं करता, जो उसके धार्मिक नियम के विपरीत हो। उसकी ज़िंदगी का निशाना लड़ना है। . . . (पृष्ठ ८८) सिक्ख कौम को जंगी फ़िरका बनाने का श्रेय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सिर है। नियमानुसार प्रत्येक सिक्ख के लिए कृपाण रखनी ज़रूरी है और उसकी ज़िंदगी का परम धर्म युद्ध करना है। . . . (पृष्ठ ८९) धार्मिक विश्वास के अनुसार वे कृपाण को म्यान में नहीं डाल सकते, जब तक प्राण न निकल जाएँ। कृपाण नीचे को हो, तो ज़िंदगी की समाप्ति के साथ। सभराउं की जंग में असंख्य सिक्ख शहीद होने और दरिया में डूबने के बाद जो बचे, वे लड़ाई के लिए इस हिम्मत के साथ तैयार थे, जैसे पहली लड़ाइयों में विजयी हों। (पृष्ठ ३०७) सिक्खों के नेता अपनी सिक्ख फ़ौज को तबाह करवाना चाहते थे, (दुश्मन के) इलाके पर कब्ज़ा नहीं करना चाहते थे।''

स्मिथ लिखता है — ''आम तौर पर सिक्खों को गप्पी और कायर समझा जाता है, लेकिन अंततः हमें पता चल गया कि सिक्ख बहादुर और अच्छे सिपाही हैं, मगर अफ़सोस, उनके सेनापति अच्छे नहीं थे।''[१२]

गफ लिखता है— ''यह हमारी खुशकिस्मती है कि सिक्ख फ़ौज के नेता निकम्मे थे।''[१३]

कनिंघम खालसा फ़ौज के नेताओं के इरादे संबंधी लिखता है— ''वे सारी फ़ौज, जो उन (नेताओं) की निजी ताकत को घृणा करती थी, को सामूहिक रूप से मरवाना चाहते थे।''[१४]

लाल सिंघ की करतूत के बारे में कनिंघम इस प्रकार लिखता है— ''वह इस गद्दारी के साथ सिक्ख राज को खतरे में डाल कर अपने रुतबे बढ़ाना चाहता था।''[१५]

सर चार्ल्स जेम्ज़ नेपियर लिखता है— ''अगर गुलाब सिंघ सिक्खों के साथ द्रोह न

करता, इधर-उधर पड़ी हुई अंग्रेज़ फ़ौज सिक्खों की कृपाण की भेंट चढ़ जाती।''[१६]

इस लड़ाई की बाबत कुछ झूठी रिवायतें चली आ रही हैं, जिन पर रौशनी डालना ज़रूरी है। एक बात पाठकों को यह समझ लेनी चाहिए कि देशद्रोही पक्ष, जो काली करतूत खुद करता था, वह दूसरों के सिर मढ़ देता था। (इस नीति का शिकार महाराजा खड़क सिंघ और संधावालीए आदि कई लोग हुए।) वही चाल यहाँ चली गई। यह अफवाह उड़ा दी (जो अभी तक अनपढ़ और इतिहास से अनभिज्ञ मनुष्यों में चली आती है) कि महारानी जिंद कौर ने सिक्ख फ़ौज को भड़का कर अंग्रेज़ों के साथ लड़ाई करवाई। उसने अंग्रेज़ों को चिट्ठियाँ लिखीं और सभराउं के मैदान में बारूद की जगह सरसों भेज दी, जिस कारण सिक्ख फ़ौज हार गई। उसने यह सब कुछ अपने भाई जवाहर सिंघ का बदला लेने के लिए किया।

आओ, अब इस पर विचार करें! आपको पता चलेगा कि लड़ाई का कारण पैदा करने वाले अंग्रेज़ थे और उधर से खालसा फ़ौज को भड़काने वाले लाल सिंघ, तेज सिंघ आदि थे, जो अंदर से अंग्रेज़ों के साथ मिले हुए थे।

महारानी जिंद कौर यह लड़ाई शुरू करने के विरुद्ध थी।[१७] बाकी रही बात चिट्ठियों की, गवर्नमेंट के सभी कागज़ और समकालीन इतिहास को खोजकर देखें, तो इससे संबंधित रानी जिंद कौर की कोई चिट्ठी नहीं मिलेगी। हां, लाल सिंघ, तेज सिंघ और गुलाब सिंघ की चिट्ठियाँ अवश्य मिल जाएंगी। लाल सिंघ बार-बार अंग्रेज़ों को लिखता है कि मैं आपका मित्र हूं। गुलाब सिंघ वज़ीर बन कर हार्डिंग के साथ फ़ैसला करता है कि खालसा फ़ौज को तबाह कर दिया जाये, तभी लाहौर दरबार संधि पर दृढ़ रह सकेगा।

बारूद और सरसों की बाबत भी आप पढ़ चुके हो कि यह तेज सिंघ की करतूत थी, जिसने नाव का पुल तोड़ दिया, बारूद से भरी बहुत-सी नाव दरिया में डुबो दीं और बाकी पेटियों में बारूद की जगह सरसों भर दी।

मगर यह दोष महारानी जिंद कौर के सिर क्यों मढ़ा गया? केवल इसलिए कि आम जनता लाल सिंघ, तेज सिंघ, गुलाब सिंघ आदि की खोटी चालों को न समझ सके। याद रहे कि महारानी जिंद कौर इस दोष से बिलकुल बरी और निर्दोष है। उसे अंत तक इस धोखे का पता ही नहीं चला। लड़ाई उससे बाहर हुई फ़ौज ने छेड़ी थी। वह मृत भाई का बदला लेने के लिए अपने मासूम बच्चे दलीप सिंघ की गर्दन पर कभी छुरी नहीं चला सकती थी। वह जानती थी कि सिक्ख फ़ौज की पराजय का अर्थ दलीप सिंघ के राज की बरबादी होगा।

अब आख़िरी सवाल उठता है कि इस

लड़ाई में सिक्ख हारे क्यों ? क्यों लाल सिंघ, तेज सिंघ आदि देश के साथ विश्वासघात करने के लिए तैयार हो गए ? क्यों मर-मिटने वाले सिपाहियों, मज़बूत तोपों और पक्के निशानेबाज़ों, गोलन्दाज़ों के होते हुए खालसा फ़ौज हार गई ? इसके कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण फ़ौज और आफिसरों में सम्पर्क का अभाव था। दोनों पक्ष आपस में बड़ी दूर हो गए थे और अपने अलग-अलग लाभ चाहते थे। सिपाहियों का अभिमानी स्वभाव और आफिसरों की ख़ुदगर्ज़ी ले डूबी। फ़ौज बड़ी तनख्वाहों और राज-प्रबंध में अपना अटल हुक्म कायम रखने के हक में थी और आफिसर खुदगर्ज फ़ौज को तबाह कर अंग्रेज़ों की मदद से अपनी ताकत बढ़ाना चाहते थे। दोनों पक्षों का निशाना अलग-अलग था। लार्ड हार्डिंग के इस वाक्य कि लाहौर दरबार के साथ संधि कर लेना मुश्किल नहीं, परन्तु खालसा फ़ौज का कौन ज़िम्मेदार बने, से स्पष्ट है कि 'फ़ौज' और 'आफिसर' दो अलग-अलग चीजें थीं।

स. जवाहर सिंघ के कत्ल होने पर फौज के भय के कारण पंजाब का वजीर कोई नहीं बनता था, क्योंकि फ़ौजी पंचों के इशारे पर सिपाहियों के हाथों कई लायक महाराजा, नामवर सरदार वजीर और शहजादे मारे गए थे। यदि लाल सिंघ और तेज सिंघ क्रमश: वजीर और सेनापति बने भी तो उपरोक्त रोग का इलाज सोच कर। वह इलाज उनके ख़्याल में एक ही था— सिक्ख फ़ौज को अंग्रेज़ों के साथ लड़ा कर तबाह करना।

इसके अलावा छोटे-छोटे और भी कारण हैं, जैसे यूरोपीय आफिसर नौकर रखना, क्योंकि वे सिक्ख हुकूमत के भेद अंग्रेज़ों के पास जाहिर करते थे। लड़ाई में भी वे वही कुछ करते रहे, जिससे अंग्रेज़ों को लाभ और सिक्खों को नुकसान पहुँचे।

कुछ मुसलमान आफिसर और फ़ौज भी थी, जिन्होंने मैदान (ख़ास कर सभराउं) में ऐसे ढंग इस्तेमाल किए (जैसे तोपों का मुँह ऊपर की ओर करके चलाना कि गोले अंग्रेज़ फ़ौज से पार जाकर गिरें, ताकि कोई नुकसान न हो), जिनसे दुश्मन को लाभ पहुँचे। यह काम उन्होंने तब किया, जब उन्हें सिक्खों की हार का विश्वास हो गया। मैकग्रेगर इसका हवाला इस प्रकार देता है— ''पंजाब के मुसलमान सिक्खों का विलक्षण ढंग का राज पसंद नहीं करते थे। वे भूले नहीं थे कि कुछ समय पहले वे खुद लाहौर के बादशाह थे। तोपखाने का हाकिम एक मुसलमान था और उसके अच्छे तोपची भी मुसलमान थे। . . . वह सिक्खों की भांति मुल्क के लिए नहीं लड़ रहे थे, वे केवल वेतनभोगी नौकर थे। भले ही वे सच्चे और वफ़ादार नौकर समझे जाते थे,

परन्तु जिस कौम (अंग्रेज़) की विजय के लिए वे दुआएं मांगते थे, उसके लिए वे थोड़ा-बहुत हाथ ढीला भी कर सकते थे। चाहे वे उन लोगों (सिक्खों) के मददगार बने हुए थे, जिन्हें वे धार्मिक वजह से अपनी आँखों से ग़ुलाम देखना चाहते थे।''[१८] हां, कुछ मुसलमान बड़े नेक और वफ़ादार रहे, जो सभराउं के मैदान में बहादुरों की भांति लड़ कर मर्दों की मौत मरे।

इस सारी लड़ाई में १२-१५ हज़ार सिक्ख फ़ौज तबाह हुई। १०-११ फरवरी की मध्य रात्रि फ़िरोज़पुर के पास से अंग्रेज़ सतलुज पार हुए और १२ फरवरी को बिना रुकावट कसूर पर आ कब्ज़ा किया। यहीं से अंग्रेज़ों को ख़बर मिली कि २० हज़ार खालसा फ़ौज श्री अमृतसर में इकट्ठी हो गई है। वहाँ गोबिंदगढ़ नामक किले में उनके पास तोपें और बारूद भी है, परंतु फ़ौज के पास कोई नेता नहीं।

१४ फरवरी, १८४६ ई. को हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग ने कसूर से लिखा हुआ यह एलान जारी किया— ''सतलुज की बांयी तरफ से फ़ौज भगा दी गई है। वह हर बात में हार गई है। उसकी २२० से ज्यादा जंगी तोपें छीन ली गई हैं। अंग्रेज़ फ़ौज सतलुज पार कर पंजाब में दाख़िल हो चुकी है। इस एलान के माध्यम से गवर्नर-जनरल जाहिर करता है कि अंग्रेज़ सरकार को गत १३ दिसंबर के एलान के अनुसार यह कदम उठाना पड़ा है, क्योंकि गवर्नर जनरल को अंग्रेज़ी इलाके की सुरक्षा करने पर मजबूर किया गया है और अंग्रेज़ी वर्चस्व को कायम रखना, संधि तोड़ने वालों को सज़ा देना और जनता में अमन कायम रखना ज़रूरी है।''

फुट नोट :

१. "Aliwal was the battle of despatch", Wanderings of a Naturalist in India, P. 60-61.
२. The Sikh Wars, P. 61.
३. उपरोक्त, पृष्ठ १४७- १४८.
४. लाडवा का राजा अजीत सिंघ अंग्रेज़ों से बाग़ी होकर रणजोध सिंघ के साथ जा मिला था।
५. कनिंघम (१८४९), पृष्ठ ३२१.
६. पंजाब हरण और दलीप सिंह, पृष्ठ ४९
७. कनिंघम (१९१८), पृष्ठ २९२ का फुट नोट।
८. (M. Gregor as in Lord Gough's despatch) मैकग्रेगर, पृष्ठ १६१.
९. कनिंघम (१८४९), पृष्ठ ३२८.
१०. मैकग्रेगर, पृष्ठ १९३.
११. The Sikh Wars, पृष्ठ १२८.
१२. (Smyth, Introduction-PXXIV) स्मिथ भूमिका।
१३. The Sikh Wars, पृष्ठ १३८.
१४. कनिंघम, पृष्ठ ३२८.
१५. कनिंघम, पृष्ठ ३३१.
१६. Defects of Civil & Military of the Indian Govt. P. 375.
१७. मैकग्रेगर, पृष्ठ ३९.
१८. मैकग्रेगर, पृष्ठ ८३-८४.

अकाली मोर्चे : सैद्धांतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

*-स. सतविंदर सिंघ फूलपुर**

'मोर्चा' फ़ारसी मूल के दो शब्दों— 'मूरचाल' और 'मूरचाना' का सामूहिक पंजाबी रूप है। 'फ़ारसी-पंजाबी कोश' के अनुसार 'मूरचाल' के अर्थ हैं— किले के गिर्द खोदा गया गड्ढा या खाई और 'मूरचाना' के अर्थ हैं— छोटी चींटी, तुच्छ, कमज़ोर।[१] पंजाबी कोशों में इन दोनों शब्दों के लिए एक ही शब्द 'मोर्चा' प्रयोग किया गया है, जिसके अर्थ मिलते हैं— जंग, पर्दा, झगड़ा, दाग़, चींटी, कीट आदि।[२] हिंदी कोशों में 'जंग' और 'मैल' के संदर्भ में 'मोर्चा' शब्द के अर्थ किए गए हैं— लोहे पर चढ़ने वाला वह काला अंश जो हवा और नमी के प्रभाव से उपन्न होता हो— जंग। शीशे, दर्पण आदि पर जमी हुई मैल।[३]

गुरबाणी में भी 'मोर्चा' शब्द जंग या मैल के अर्थ में चार बार आया है :

— जनम जनम के लागे बिखु मोरचा
लगि सगति साध सवारी॥ (पन्ना ६६६)
— कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ
तह गरभ जोनि कह आवै॥ (पन्ना ९७८)
— इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै॥
मोरचा न लागै जा हउमै सोखै॥
(पन्ना ११५)
— भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा
अमोल पदारथु लाधिओ॥ (पन्ना ५३०)

साधारणतया प्रचलित रूप में इसके अर्थ हैं— किले की दीवार या अवरोध आदि में बनाया छेद, जिसमें से दुश्मन पर तीर, गोली आदि चलाया जाए। शत्रु के शस्त्रों से बचाव के लिए खोदा गया गड्ढा और खाई, जिसमें सिपाही छिप कर बैठते और दुश्मन पर वार करते हैं।[४]

'पंजाबी-अंग्रेज़ी कोश' के अनुसार मोर्चा शब्द के अंग्रेज़ी में समानार्थी शब्द हैं — Trench, fortification, military position, battle front, agitation, political movement etc.[५]

उपरोक्त में से शब्द Agitation 'मोर्चा' शब्द के साथ कुछ समीपता के भाव तो प्रकट करता है, परंतु पूर्णत: सिक्ख मोर्चों के लिए उपयुक्त शब्द नहीं है। कुछ विद्वानों ने इसे 'मोर्चा' शब्द की जगह इस्तेमाल किया है। दोनों शब्दों के अर्थ को गहराई के साथ समझने पर इनका सूक्ष्म अंतर स्पष्ट हो जाता है। Agitation के अँग्रेज़ी कोशों में अर्थ मिलते हैं :— Public protest in order to achieve political change, worry and anxiety that you show by behaving in a

**संपादक, फोन : ९९१४४-१९४८४*

nervous way. To make other people feel very strongly about something so that they want to help you achieve it.[६] अर्थात् लोगों की वह चिंता, भय, फ़िक्र, परेशानी, व्याकुलता, जिसे लोग बेचैन होकर, बौखलाहट और उत्तेजना में आकर प्रकट करें। ऐसी बौखलाहट और उत्तेजना हमेशा अशांति और दंगा-फ़साद पैदा करने का कारण बनती है। दूसरा, एजीटेशन में किसी उद्देश्य-पूर्ति के लिए दूसरे लोगों को दृढ़ करवाया जाता है, ताकि वे इसकी सफलता के लिए आपकी मदद करनी चाहें।

सिक्ख 'मोर्चों' में स्वेच्छा के साथ शांतचित्त होकर गुरुधामों की पवित्रता की ख़ातिर उत्साहपूर्वक कुर्बानी करने के लिए तैयार हो जाते हैं, फिर आगे से चाहे लाठियां बरसें, चाहे गोलियाँ चलें, वे गुरु साहिबान के पवित्र वचन— ''तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥'' के अनुसार मरना स्वीकार करते हैं। फिर वो माँ, जिसका गोद उठाया हुआ दूध पीता बच्चा दुश्मन की गोली लगने से शहीद हो जाता है, पीछे नहीं हटती। अपने बच्चे को बालू पर रख कर गुरुधामों की पवित्रता की ख़ातिर कुर्बान होने के लिए पुन: मोर्चे में शामिल हो जाती है। मोर्चों में सिंघ दुश्मनों के जब्र को देख कर घबराते नहीं, उत्तेजना में आकर अशांति नहीं फ़ैलाते, बल्कि जब्र को सब्र के साथ सहन कर शहादत दे जाते हैं। प्रसिद्ध लेखक और ईसाई प्रचारक सी. एफ. एंड्रयू , जिसने गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे के समय अंग्रेज़ पुलिस आफिसर बी. टी. द्वारा सिक्खों पर ढाया जा रहा कहर अपनी आंखों से देखा था, लिखता है कि सिक्ख हज़रत ईसा मसीह की भांति शांतमयी रह कर जब्र का सामना करते हैं। उनका यह कर्त्तव्य अति प्रशंसनीय है।

इस प्रकार सिक्ख तवारीख में सिक्ख संघर्ष के समय 'मोर्चा' शब्द जिन विस्तृत अर्थों में इस्तेमाल किया गया है, उसके हू-ब-हू प्रासंगिक भाव प्रकट करने वाला शब्द अंग्रेज़ी भाषा में नहीं मिलता, इसलिए ज़्यादातर अंग्रेज़ी रचनाओं में 'मोर्चा' शब्द का लिप्यंतरण कर 'Morcha' ही लिखा मिलता है और इसके अर्थ किये मिलते हैं— एक ही स्थान पर बैठे, एक ही फ़ैसले को मनवाने के लिए स्थिर व अचल साधन या अपनी माँगें मनवाने के लिए किसी एक ही सिद्धांत पर दृढ़ रह कर बैठ जाना और विरोधी के विरुद्ध शांतमयी टक्कर जमा देनी।[७] इस संदर्भ में 'मोर्चा' शब्द पहली बार सिक्ख इतिहास में 'आंदोलन' या 'सत्याग्रह' के अर्थ में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के समय प्रचलित हुआ, जब गुरुद्वारों की आज़ादी के लिए सिक्ख जत्थे शान्तिपूर्वक कार्यवाही करने के लिए जेलों में जाते रहे।[८]

सिक्ख मोर्चों की कामयाबी के कारण राजनीतिक पार्टियों की तरफ से यह शब्द शांतमयी आंदोलनों के लिए इस्तेमाल किया

जाने लगा, जैसे— किसान मोर्चा, हिंदी मोर्चा, पटवारी मोर्चा आदि। धीरे-धीरे इस शब्द का प्रयोग हिंदी भाषीय क्षेत्रों में आंदोलनों या जत्थेबंदियों के लिए होने लगा, जैसे— जन-मोर्चा, लोकहित-मोर्चा, झारखंड मुक्ति-मोर्चा आदि।[९]

अब 'मोर्चा' शब्द पंजाबी सभ्याचार में इतना ज़्यादा प्रचलित हो चुका है कि प्रत्येक कार्य की सफलता से सम्बन्धित कर मोर्चे के अनेक मुहावरे प्रचलित हो चुके हैं, जैसे— मोर्चा लगाना, मोर्चा गाड़ना, मोर्चा मारना, मोर्चा संभालना, मोर्चा जीतना, मोर्चा फतह करना आदि।

सिक्ख मोर्चों का आरंभ गुरुद्वारों को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के लिए हुआ। गुरुद्वारों के साथ सिक्खों के अति भावना वाले सम्बन्ध सिक्खों की चढ़दी कला का प्रकटावा हैं। अंग्रेज़ सरकार ने पंजाब पर कब्ज़ा करते ही सोच लिया था कि सिक्खी के प्रेरणा-स्रोत और महान केंद्र— गुरुद्वारों पर कब्ज़ा करना पूरे सिक्ख संसार पर काबू पा लेना है, इसलिए अंग्रेज़ों ने कूटनीतिक चाल चलते हुए महंतों के माध्यम से गुरुद्वारों में समूह ब्राह्मणी रीति-रिवाज़, वर्ण-विभाजन, जात-पाँत के भेदभाव तथा छुआ-छूत का प्रवेश करवा दिया, ताकि सिक्खों का निश्चय कमज़ोर हो सके और इनकी शक्ति में गिरावट आ सके। इन दुराचारी महंतों ने गुरुद्वारों को अंग्रेज़-शासन की सुरक्षा, मज़बूती के लिए उनकी ख़ुशामद के केंद्र और अपने लिए दुराचार के अड्डे बना दिया था। अरदास में भी अंग्रेज़ी-शासन की सलामती और ख़ुशहाली की माँग की जाती थी। सिक्ख अपने गुरुधामों की ऐसी दशा का घटनाक्रम अपनी आंखों से देख कर इसे किसी भी कीमत पर सहन करने के लिए तैयार नहीं थे। वे हर हाल में गुरुद्वारों को संगती प्रबंध में लाना चाहते थे।

प्रिं. तेजा सिंघ लिखते हैं कि सिक्खों के पास गुरुद्वारों को महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाने के लिए तीन साधन थे— असहयोग, लोक-राय का दबाव और मुकद्दमे। (There were three ways open to Sikhs to carry out reform in their temple; boycott, pressure of public opinion and litigation.)[१०] सिक्खों ने सर्वप्रथम Charitable and Religious Indowment Act (Act xiv 1920) के अंतर्गत अदालत के माध्यम से अपने धार्मिक स्थानों का प्रबंध महंतों से वापस लेने के लिए काफ़ी जद्दोजहद की, लेकिन महंतों को सरकार का समर्थन प्राप्त होने के कारण अदालतों ने भी सिक्खों की कोई मदद नहीं की।[११] क्योंकि गुरुद्वारों के प्रबंध में दख़ल देकर उन्हें अपने अधीन रखना और अपने शासन की मज़बूती के लिए इस्तेमाल करना ही अंग्रेज़ सरकार की मुख्य नीति थी। इस बात का पता पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर आर. ई. एजर्टन द्वारा ८ अगस्त, १८८१ ई. को

हिंद के वायसराय की तरफ लिखी चिट्ठी से चलता है, जिसमें उसने यह सुझाव दिया था कि गुरुद्वारों के प्रबंध से सम्बन्धित अंग्रेज़ सरकार द्वारा चालू की पालिसी में कोई तबदीली न की जाए।[१२]

जब कानून ने भी कोई मदद न की तो सिक्खों के पास गुरुद्वारों पर जबरन कब्ज़ा करने के सिवा और कोई चारा न रहा। कई स्थानों पर सिक्ख कुछ गुरुद्वारों के प्रबंध पर कब्ज़ा करने में सफल हो गए, परन्तु सरकार ने सिविल नोटिफिकेशन जारी कर इसे रद्द कर दिया।[१३]

फिर सिक्खों ने अपने आप को लोकल अकाली जत्थों के रूप में संगठित कर शांतमयी आंदोलन को अपना हथियार बना लिया और गुरुद्वारों के प्रबंध-सुधार के लिए मोर्चे लगाने शुरू कर दिए। ये जत्थे किसी केंद्रीय जत्थेबंदी में संगठित न होने के कारण अलग-अलग इलाकों में बंटे हुए थे। किसी मज़बूत केंद्रीय संगठन की कमी के कारण ये अपने लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्णतया सफल नहीं हो सकते थे, मगर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अस्तित्व में आने से सिक्खों की बिखरी हुई शक्ति एकजुट होकर मज़बूत केंद्र का रूप धारण कर गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के निर्णय समूचे 'सिक्ख पंथ' के निर्णय समझे जाने लगे। इस प्रकार मोर्चों की सक्रियता और तेज़ हो गई। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोर्चों में पाँचवें और नौवें पातशाह के दिखाए पदचिन्हों पर चलते हुए, अकाल पुरख का आदेश मानते हुए, हाकिम सरकार का बिना विरोध किये, हर अत्याचार सहते हुए, शहादत देते हुए गुरुद्वारों का प्रबंध पंथक हाथों में लाने का संकल्प लिया और व्यभिचारी महंतों के कुकर्मों की मैल को अपने ख़ून से धोकर मोर्चों का लासानी इतिहास सृजित किया।

एक अन्दाजे के अनुसार इन मोर्चों में दो हज़ार से अधिक सिंघ-सिघनियों ने अपनी जान कुर्बान की और इतनी ही संख्या ने जांबाजों ने बी. टी. की मार सही। पचास हज़ार से अधिक अकाली वीरों ने जेलों में काल-कोठरियों की यातनाएं सहीं, अपनी जायदादें गंवाई और सोलह लाख से अधिक राशि कौम को जुर्माने के तौर पर भरनी पड़ी।[१४]

इन मोर्चों की सफलता ने न केवल गुरुद्वारों को ही महंतों के कब्ज़े से आज़ाद करवाया बल्कि देश की आज़ादी के लिए नए पंथ का निर्माण कर लोगों में धर्म और देश-प्रेम के लिए मर-मिटने का जज़्बा भी पैदा किया। इसी लिए चाबियों के मोर्चे की सफलता पर बधाई देते हुए महात्मा गांधी ने कहा था कि यह देश की आज़ादी के लिए पहली निर्णायक लड़ाई की विजय है।

यहाँ हम कुछ ऐतिहासिक मोर्चों के बारे में संक्षिप्त रूप से चर्चा कर रहे हैं :—

गुरुद्वारा चुमाला साहिब का मोर्चा : छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से

सम्बन्धित ऐतिहासिक गुरुद्वारा चुमाला साहिब, लाहौर में सुस्थित है। गुरुद्वारा चुमाला साहिब (पातशाही छठी) लाहौर के महंत हरी सिंघ ने गुरुद्वारा साहिब में गुरमति विरोधी माहौल बना रखा था। सराय के सभी कमरे उसने मीट बेचने वाले बूचड़ों को दिए हुए थे। खालसा प्रचारक जत्थे ने उसकी कार्यवाहियों के विरुद्ध २१ अगस्त, १९२० ई. को एक मीटिंग बुलाई। महंत ने औरतों से हमला करवा कर मीटिंग में व्यवधान पैदा किया। २२ अगस्त को प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान व लेखक स. सरदूल सिंघ कवीशर और उसके साथियों ने गुरुद्वारे में दीवान सजा कर संगत को गुरुद्वारे के हालात से अवगत कराया। २७ सितंबर, १९२० ई. को सिक्खों ने इकठ्ठा होकर गुरुद्वारे के इंतज़ाम के लिए १२ सदस्यीय कमेटी गठित की। पंजाब के ख़ुफ़िया विभाग महकमे के एक प्रमुख अधिकारी वी. डब्ल्यू. स्मिथ की तरफ से २२ फरवरी, १९२० ई. को बर्तानवी सरकार को भेजी एक रिपोर्ट में भी इसका ज़िक्र है कि सिक्खों ने सबसे पहले कब्ज़ा गुरुद्वारा श्री चुमाला साहिब पर ही किया था।[१५]

गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब का मोर्चा : अंग्रेज़ सरकार ने वायसराय की दिल्ली स्थित कोठी का रास्ता सीधा करने के लिए १९१४ ई. में गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब की दीवार का कुछ हिस्सा गिरा दिया, जिस पर सिक्खों में सरकार के ख़िलाफ़ भारी आक्रोश पैदा हुआ। १९१४ ई. में ही प्रथम विश्व-युद्ध शुरू हो जाने के कारण गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब के मोर्चे का संघर्ष धीमा पड़ गया। सितंबर, १९२० ई. में स. सरदूल सिंघ कवीशर की तरफ से एक सौ सिंघों का जत्था ले जाकर दीवार के पुनर्निमाण की तजवीज़ पर अनेक सिंघों ने अपने नाम पेश किए और १ दिसंबर, १९२० ई. को इस सौ सिंघों के जत्थे ने दीवार का निर्माण करना था, परंतु सरकार ने इससे पहले ही दीवार बना दी। इस प्रकार गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब की दीवार का मोर्चा सफल हो गया।[१६]

मोर्चा भाई फेरू जी : भाई फेरू जी का गुरुद्वारा गाँव मीएं के मौड़, तहसील चूहणियां, ज़िला लाहौर में स्थित है। २१ दिसंबर, १९२२ ई. को महंत किशन दास ने चार सौ रुपए महीना लेना मान कर २८ दिसंबर को गुरुद्वारे का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर को सौंप दिया। कुछ समय पश्चात् वह समझौते से मुकर गया और गुरुद्वारे के मैनेजर पर मुकद्दमा दायर कर दिया। ७ दिसंबर, १९२३ ई. को पुलिस ने मैनेजर और दस अन्य सिंघों को गिरफ़्तार कर लिया। डिप्टी कमिशनर लाहौर ने गुरुद्वारे की ज़मीन का इंतकाल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नाम कर दिया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ज़मीन का कब्ज़ा लेना चाहा। महंत ने पुलिस की मदद माँगी। पुलिस ने ३४ अकालियों और मुजारों (जमीन पर अनाधिकृत रूप से काबिज़ लोग)

को २ जनवरी, १९२४ ई. को गिरफ़्तार कर लिया। ५ जनवरी, १९२४ ई. को गुरुद्वारा साहिब भाई फेरू जी में मोर्चा लग गया। प्रतिदिन २५ सिंघों का जत्था जाकर गिरफ़्तारियाँ देता रहा। छः हज़ार से अधिक गिरफ़्तारियाँ हुईं। २० सितंबर, १९२५ ई. को गुरुद्वारा साहिब भाई फेरू जी में एक कत्ल हो जाने के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोर्चा बंद कर दिया। गुरुद्वारा कानून बन जाने पर जायदाद का झगड़ा ख़त्म हो गया। गुरुद्वारा प्रबंध और ज़मीन का कब्ज़ा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर को मिल गया।[१७]

डसका का मोर्चा : सियालकोट के नगर डसका में भाई वरिआम सिंघ का गुरुद्वारा है। वहाँ के प्रबंध को लेकर कुछ समय से हिंदुओ और सिक्खों में झगड़ा चला आ रहा था। गुरुद्वारे का प्रबंध सिक्खों के पास था और दुकानें हिंदुओं के पास थीं। सिक्खों ने हिंदुओं से दुकानों का कब्ज़ा लेने की कोशिश की, मगर वे अदालती तरीके से कामयाब न हो सके। इस पर बाबा खड़क सिंघ प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर ने मोर्चा लगाने का एलान कर दिया और १७ अगस्त, १९३१ ई. को २५ सिंघों का जत्था लेकर जेल चले गए। ४ अक्तूबर, १९३१ ई. को मास्टर तारा सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का जरनल इजलास बुला कर समूह सदस्यों को गुरुद्वारे के सम्मान के लिए कुर्बानी कर पंथ का नेतृत्व करने की अपील की। मास्टर तारा सिंघ ने अपने जत्थे सहित गिरफ़्तारी दी।[१८] इसके पश्चात् बाकायदा जत्थे जाने लगे। गुरुद्वारे से सम्बन्धित सालसी फ़ैसला हुआ . . .। इस फ़ैसले को सभी ने स्वीकार कर लिया और मोर्चा फतह हो गया।

कृपाण की आज़ादी का मोर्चा : हिंदोस्तान के शस्त्र अधिनियम (XI १८७८) के अनुसार बिना लायसंस या छूट के कोई भी अपने पास हथियार नहीं रख सकता था, इसलिए सिक्खों के कृपाण पहनने पर भी पाबंदी लगा दी गई। सिक्खों ने कृपाण रखने की आज़ादी के लिए मोर्चा शुरू कर दिया। हज़ारों सिक्खों को शस्त्र अधिनियम का उल्लंघन करने के कारण जेल भेजा गया। कृपाण बनाने वाली फ़ैक्टरियों पर छापे मारे गए। इस मोर्चे के हक में प्रचार करने के लिए १९२२ ई. में 'कृपाण बहादुर' नामक साप्ताहिक पत्रिका जारी की गई, जिसके संपादक स. सेवा सिंघ ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक-राय स्थापित करने में रचनात्मक भूमिका निभाई। तीन फुट आकार की कृपाण रखने के कारण पकड़े गए सिक्खों को 'कृपाण बहादुर' का ख़िताब दिया जाने लगा। सन् १९२२ में सरकार और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में समझौता हो गया और कृपाण रखने पर पाबंदी ख़त्म कर दी गई। इससे 'कृपाण का मोर्चा' समाप्त हो गया।[१९]

पंजाबी सूबा मोर्चा : देश के विभाजन के बाद

भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की बात चली। पंजाबी भाषा के आधार पर पंजाबी सूबे की स्थापि के प्रति केंद्र सरकार का रवैया नकारात्मक देख कर मास्टर तारा सिंघ द्वारा १० मई, १९५४ ई. को जत्थे सहित गिरफ़्तारी देकर पंजाबी सूबा मोर्चा आरंभ कर दिया गया। विभिन्न उतराव-चड़ाव से गुज़रता हुआ, ऐतिहासिक निशान छोड़ता हुआ, १ नवंबर, १९६६ ई. को पंजाबी सूबा बन जाने से यह मोर्चा फतह हो गया। इस मोर्चे में सत्तावन हज़ार से अधिक सिक्खों ने जेल काटी और कुछ शहीद भी हुए।

हवाले और टिप्पणियाँ :

१. डॉ. राजिंदर सिंघ (संपा.), फ़ारसी-पंजाबी कोश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९९६, पृष्ठ ६६८

२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, नेशनल बुक शॉप, १९९८, पृष्ठ ९९९

३. श्री नवल जी (संपा.), नालंदा विशाल शब्द सागर, न्यू इम्पीरियल बुक डिपो, नई सड़क, देहली, पृष्ठ ११२८

४. महान कोश, उक्त

५. एस. एस. (जोशी) (संपा.), पंजाबी-अंग्रेज़ी कोश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९७४, पृष्ठ ७३६

६. *Oxford Dictionary* (English to English and English to Hindi), Page 30, 26

७. स. बखशी सिंघ आदिल, अकाली मोर्चा १९८२, नवीन प्रकाशन, श्री अमृतसर, १९९०, पृष्ठ १३

८. डॉ. रतन सिंघ जग्गी, सिक्ख पंथ विश्व कोश, भाग दूसरा, गुर रत्न पब्लिशर्स, पटियाला, २००५, पृष्ठ १४६०

९. Harbans Singh (Ed.), *The Encyclopedia of Sikhism,* Punjabi University Patiala, 1997, Page. 123

१०.Teja Singh, *The Gurdwara Reform Movement and The Sikh Awakening,* Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar,1984, Page 61

११. Mohinder Singh, *The Akali Movement,* National Institute of Punjab Studies, New Delhi, 1997, Page 17

१२. डॉ. गंडा सिंघ, गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर १९२०-१९२५, अकेडमी ऑफ सिक्ख रिलीजन एंड कल्चर, ढिल्लों मार्ग, पटियाला, १९७८, पृष्ठ ७

१३. Mohinder Singh, Opp. Page18

१४. दो शब्द स. गुरचरन सिंघ टौहड़ा, ज्ञानी प्रताप सिंघ, गुरुद्वारा सुधार अकाली लहर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९७५, पृष्ठ ८

१५. डॉ. कुलवंत सिंघ (बाजवा) (संपा.), अकाली दल सच्चा सौदा बार, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रंबधक कमेटी, श्री अमृतसर, २०००, पृष्ठ १०

१६. डॉ. गंडा सिंघ, उक्त, पृष्ठ १०

१७. स. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, नवयुग पब्लिशर्स, दिल्ली, १९७२, पृष्ठ ३८८

१८. स. शमशेर सिंघ अशोक, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी दा ५० साला इतिहास, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर, १९९८, पृष्ठ १०४

१९. सिक्ख पंथ विश्व कोश, भाग प्रथम, पृष्ठ ५०५

साका श्री ननकाणा साहिब

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री ननकाणा साहिब का नाम लेते ही हर सिक्ख के मन में निर्मल भावनाओं का निर्झर प्रवाह प्रस्फुटित होने लगता है, जो सिक्ख पन्थ की आदि महानता के साथ जोड़ कर अक्षय गौरव से भर देता है। सन् १४६९ में श्री गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश ने राय भोय की तलवंडी नामक एक सामान्य गांव को मानवीय मूल्यों का विश्व तीर्थ बना दिया, जिसे पूर्ण आदर से श्री ननकाणा साहिब के रूप में स्मरण कर हम उपकृत होते हैं। राय भोय की तलवंडी के जमींदार राय बुलार ने आरंभ में ही बाल-रूप श्री गुरु नानक साहिब जी में आध्यात्मिक प्रकाश के दर्शन कर लिये थे। पुस्तक 'सिक्ख और उनके धर्म का इतिहास' के अनुसार तलवंडी गांव में मुख्य रूप से भट्टी राजपूतों का प्रभाव था। इस गांव को हिंदू राजा विराट ने बसाया था। यह गांव बाहरी आक्रमणों में अनेक बार उजाड़ा गया। यहां निवास करने वाले मुस्लिम भट्टी प्रमुख राय भोय के नाम पर इसे राय भोय की तलवंडी कहा जाने लगा। राय भोय के पुत्र राय बुलार ने इसका पुनर्निर्माण कराया और एक किला बना कर उसमें रहने लगा था। श्री ननकाणा साहिब अब पाकिस्तान में है और लाहौर से लगभग तीस मील दूर स्थित है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने श्री ननकाणा साहिब में अनेक कौतुक रचे। बाद में गुरु साहिब सुलतानपुर लोधी आ गये थे और वहां से पूरा जगत उनका कार्यक्षेत्र बन गया, किन्तु तलवंडी से उनका सम्बन्ध बना रहा। सांसारिक जीवन के अंतिम अठारह वर्ष गुरु साहिब ने अपने बसाये नगर करतारपुर में व्यतीत किये, किन्तु श्री ननकाणा साहिब में उन्होंने जो इतिहास रचा था वह सिक्ख पंथ का आधार बना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सिक्ख गुरु साहिबान के काल में सिक्खी के केंद्र बदलते रहे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने महाराष्ट्र के नांदेड़ साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरुआई सौंपी और वहीं ज्योति-जोत समाये थे। गुरु साहिबान के चरण जहां-जहां पड़े वे सारे स्थान पावन हो गये। उन स्थानों पर स्मृति हेतु गुरु-स्थान विकसित होते गये। उन स्थानों को सिक्खों ने विकसित किया, किन्तु संघर्ष के भयानक दौर में जब सिक्खों की बड़ी संख्या में शहादतें हुई और सिक्ख जंगलों, एकांत स्थानों में शरण लेने को विवश हो गए, अवसर का लाभ उठाते हुए उदासी सम्प्रदाय के लोग और महंत आदि सिक्ख धर्म-स्थानों का नियन्त्रण अपने हाथों में लेने में सफल हो गए थे। एक समय

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

आया जब सिक्ख संगत का गुरु-स्थानों पर कोई अधिकार न रहा।

वास्तव में सिक्खों को गुरु-स्थानों से दूर कर दिये जाने का कारण सम्पत्तियों और गुरु-स्थानों पर चढ़ने वाले चढ़ावे का लोभ था। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने शासन-काल में गुरु-स्थानों के नाम जागीर, ज़मीन व अन्य सम्पत्ति लगाई, ताकि गुरु-स्थानों का प्रबंध व विकास आर्थिक रूप से पछड़ न जाए। महंतों आदि का गुरु-स्थानों के प्रबंध में हस्तक्षेप व उन पर अपना अधिपत्प स्थापित करना मात्र गुरु-स्थानों की आय को हड़पना था।

सिक्ख संगत ने गुरु-स्थानों के प्रबंध के लिये श्रद्धापूर्वक अपनी सम्पत्तियां दान की थीं। सिक्ख राज के समय तक यदि किसी महंत अथवा पुजारी के विरुद्ध कदाचार की कोई शिकायत आती थी उसे तत्काल हटा दिया जाता था। जब जमीनों का बन्दोबस्त हुआ तो महंत उन सम्पत्तियों के स्वामी बन गये। ब्रिटिश सरकार ने सन् १८४९ में पूरे पंजाब को अपने राज्य में मिला लिया। इसके पश्चात स्थितियां एकदम बदल गईं। गुरुद्वारों पर कब्जा जमाये महंतों को अंग्रेज अधिकारियों का पूरा समर्थन प्राप्त था। स. सोहन सिंघ जोश ने अपनी पुस्तक 'अकाली मोर्चों का इतिहास' में लिखा है कि ''अंग्रेज सरकार ने गुरुद्वारों पर पूर्ण कब्जा जमाया हुआ था। गद्दीदार महंत अफसरों के पिठू और पालतू ताबेदार बने हुए थे। वे ढोंगी थे और सिक्ख धर्म के उसूलों को तिलांजलि दे चुके थे। दुराचार, बदकारी और भ्रष्टाचार उनका नित्य का व्यवहार बन गया था। अपराधी अपने अपराधों पर पर्दा डालने के लिये वक्त के हाकिमों के आगे सरकारपरस्त लोगों से भी ज्यादा झुक-झुक कर सलाम करते और उनकी खुशामद करते थे। आफिसर इनकी कमजोरियों को जानते थे। वे इनसे काफी सेवा कराते और कई किस्म के चंदे हासिल करते। अंग्रेज हाकिमों की पालिसी यह दिखाई देती थी कि महंतों के ऐबों की तरफ नेलसन वाली तिरछी आंख किये रखो और गुरुद्वारों को अंग्रेज राज की मजबूती के लिये इस्तेमाल करो। इनमें अंग्रेज राज के खिलाफ कोई आवाज न उठने दो। इस तरह गुरुद्वारे अंग्रेज राज की रक्षा, मजबूती और खुशामद के केंद्र बन गए थे।''

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि गुरुद्वारों का प्रबंध जिन हाथों में पहुंच चुका था वे सम्पत्तियों के मद में कितने भ्रष्ट, स्वेच्छाचारी और सरकारी सहयोग से कितने ताकतवर बन चुके थे। इसका सीधा प्रभाव गुरुद्वारों की मर्यादा पर पड़ना आरंभ हो गया। दर्शन के लिये आने वाली संगत के साथ दुर्व्यवहार की घटनायें आम हो गईं। इससे सिक्खों में आक्रोश व्याप्त होने लगा। सिक्ख भली-भांति अंग्रेजों की नीतियों को समझ चुके थे। सिक्खों और अंग्रेजों में टकराव भी आरंभ हो गया। गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब, दिल्ली की दीवार गिराने पर सिक्ख भड़क उठे। इस मध्य प्रथम विश्व-युद्ध आरंभ हो जाने से मोर्चा स्थगित कर दिया गया। नवंबर, १९१८ ई. में विश्व-युद्ध समाप्त होने के बाद गुरुद्वारा

प्रबंध सुधार के आन्दोलन को गति मिलने लगी। सन् १९२० का वर्ष सिक्ख पन्थ के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुआ। गुरुद्वारों के प्रबंध सुधार के विधिवत प्रस्ताव सामने आये और अकाली मोर्चे को व्यापक सहयोग मिलने लगा। श्री दरबार साहिब और श्री अकाल तख्त साहिब पर अकालियों का प्रबंध स्थापित हो गया। यह बड़ी सफलता थी। इसके बाद १५ नवंबर, सन् १९२० को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अस्तित्व में आई। १४ दिसंबर, सन् १९२० को शिरोमणि अकाली दल का भी गठन हो गया। ये दोनों संस्थाए सिक्खों के प्रतिनिधि के रूप में शीघ्र ही स्थापित होने में सफल हो गईं। सन् १९२१ का वर्ष बड़े संघर्षों का वर्ष रहा। अकालियों ने पुजारियों के कब्जे से आजाद कर गुरुद्वारा तरनतारन साहिब पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

अकाली नेताओं की नजर सभी प्रमुख गुरुद्वारों के प्रबंध सुधार पर थी। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब से निरंतर चिंताजनक समाचार प्राप्त हो रहे थे। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पर भी परोक्ष रूप से अंग्रेज सरकार का ही नियन्त्रण था। यह प्राविधान था कि लेफ्टिनेंट गवर्नर अथवा उसके किसी प्रतिनिधि की स्वीकृति से ही कोई गुरुद्वारे का महंत बन सकता था। उस समय गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का महंत नारायण दास था। नारायण दास चरित्रहीन और आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। अपने ही तरह के लोगों का उसने गैंग बना रखा था। इससे गुरुद्वारे की सारी मर्यादा तार-तार हो रही थी। उसे व्यभिचार का अड्डा बना दिया गया था। गुरु-दर्शन को आए परिवार की एक तेरह वर्ष की बच्ची की इज्जत गुरुद्वारा परिसर में लूट ली गई थी। उसी वर्ष पूर्णमासी के दिन चढ़ावा चढ़ाने आई लायलपुर की छः महिलाओं के साथ दुरविवहार की भी खबर आई थी। अक्तूबर, सन् १९२० में धारोवाली में एक बड़ा दीवान हुआ, जिसमें महंत नारायण दास के कुकृत्यों का विरोध करते हुए उसे सुधर जाने की चेतावनी दी गई। सिक्ख नेता सरदार लछमण सिंघ धारोवाली ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध में सुधार के लिये एक शहीदी जत्थे के गठन की भी घोषणा कर दी।

पुस्तक 'अकाली दल सच्चा सौदा बार' के अनुसार इस दीवान की कार्रवाई की खबर महंत नारायण दास को भी मिली। उसने अपने आप को सुधारने के स्थान पर नवंबर माह में ४०० गुंडे एकत्र किये और उन्हें वेतन पर रख लिया। इन गुंडों में रांझा और रिहाना जैसे खूंखार बदमाश व कातिल भी शामिल थे। महंत ने कतिपय स्थानीय प्रभावशाली लोगों का समर्थन भी हासिल कर रखा था। उसने अपने समर्थकों की एक बैठक १२ दिसंबर, १९२० को बुलाई, जिसमें अकालियों से जोरदार ढंग से टकराने का निर्णय लिया गया। उन्होंने एक अलग गुरुद्वारा कमेटी भी बना ली, जिसका अध्यक्ष महंत नारायण दास को बनाया गया। २६ नवंबर को श्री गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर महंत ने बड़ी संख्या में गुंडों को जुटा लिया

किन्तु कोई अप्रिय घटना नहीं घटी, क्योंकि उस दिन अकालियों के आने का कोई कार्यक्रम नहीं था।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का वातावरण पूरी तरह से तनावपूर्ण बन गया था। इस पर विचार करने के लिये २४ जनवरी , सन् १९२१ को श्री अकाल तख्त साहिब पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की एक बैठक हुई। इस बैठक में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की स्थिति और महंत नारायण दास के व्यवहार पर गंभीर विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि ४, ५ व ६ मार्च, सन् १९२१ को श्री ननकाणा साहिब में एक समागम किया जाये और महंत को अपने आचरण में सुधार करने के लिये कहा जाये। स्पष्ट था कि अकाली किसी तरह का कोई टकराव नहीं चाहते थे और उनका उद्देश्य श्री ननकाणा साहिब जैसे पावन स्थान की मर्यादा सुनिश्चित करना था। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को यद्यपि व्यापक जन-समर्थन प्राप्त था और समर्पित कार्यकर्ताओं का कोई अभाव नहीं था, किन्तु उसका विश्वास अपनी शक्ति के पूर्ण संयमित उपयोग में ही था। कमेटी आपसी वार्ता और समझौते के सभी सम्भव उपाय करने के पक्ष में थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एक पत्र भी कुछ प्रभावशाली सिक्खों, अधिकारियों को भेजा कि वे महंत को समझायें कि वह गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध सिक्खों को सौंप दे। यह वास्तव में सिक्ख सिद्धांतों के अनुकूल था और आदर्श व्यवहार था। समागम की तैयारियों के क्रम में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ६ फरवरी को भाई लछमण सिंघ धारोवाली सहित पांच सिक्खों की एक कमेटी मार्च में होने वाले समागम के लंगर की व्यवस्था के लिये गठित कर दी। सरदार सोहन सिंघ जोश ने लिखा है कि महंत अपने बचने के उपाय करने लगा। उसने महाराजा पटियाला से सहायता मांगी। निराश महंत सरकार से सुरक्षा के लिये ऐसी हथियारबंद पुलिस की मांग करने लगा, जिसे गोली चलाने का अधिकार हो। सरकार के इन्कार के बाद महंत ने अपनी तैयारियां आरंभ कर दीं। वह किसी भी कीमत पर अपना प्रबंध बनाये रखना चाहता था। उसने पठानों को वेतन पर भर्ती कर लिया तथा अन्य अपराधी किस्म के लोगों और हथियारों को जुटाने लगा। गुरुद्वारा साहिब का लकड़ी का गेट बदल कर उसने लोहे का गेट लगवा दिया और उसमें गोली दागने के लिये छेद भी बनवा दिये। महंत स्थानीय समर्थन प्राप्त करने पर भी पूरा ध्यान केंद्रित कर रहा था। एक ओर वह अकालियों को विफल करने के पूरे कुचक्र रच रहा था, दूसरी ओर उनसे वार्ता का भ्रम भी पैदा कर रहा था। वार्ता के लिये १५ फरवरी को एक बैठक नियत की गई, किन्तु आने की बात कह कर भी महंत बैठक में शामिल नहीं हुआ। उसकी चाल प्रकट रूप में स्वयं को शांतिपूर्ण व समझौते का उत्सुक साबित करने की थी, जबकि वह पर्दे के पीछे श्री ननकाणा साहिब आने वाले सिक्खों के कत्ल की पूरी तैयारी कर चुका था। इसकी जानकारी जब

सिक्ख नेता भाई करतार सिंघ झब्बर को मिली तो उन्होंने भाई लछमण सिंघ धारोवाली तथा भाई बूटा सिंघ से सम्पर्क स्थापित किया और तय किया कि मार्च के समागम की प्रतीक्षा न कर २० फरवरी को प्रात: ही गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पर से महंत का हुआ कब्जा कर महंत की सारी साजिशों को विफल कर दिया जाये। उनकी योजना १९ फरवरी की रात को ही श्री ननकाणा साहिब पहुंच जाने की बन गई। उन्हें यह भी सूचना मिल गयी कि १९ और २० फरवरी को महंत लाहौर जाने वाला है। भाई करतार सिंघ झब्बर आदि की योजना की भनक किसी तरह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेताओं को लग गई और उन्हें श्री ननकाणा साहिब जाने से रोकने के प्रयास आरंभ हो गये। भाई करतार सिंघ झब्बर को रोक लिया गया, किन्तु भाई लछमण सिंघ धारोवाली के नेतृत्व वाला जत्था श्री ननकाणा साहिब की सीमा तक पहुंच चुका था। इस जत्थे ने कब्जा करने की कार्रवाई न करने की बात मान ली, किन्तु कहा कि २० फरवरी को श्री गुरु हरिराय साहिब का प्रकाश पर्व है, इसलिये यहां आ गये हैं तो गुरुद्वारे में माथा टेक कर ही जायेंगे। उधर महंत नारायण दास, जो लाहौर जा रहा था, किन्तु रात में श्री ननकाणा साहिब स्टेशन पर एक मुस्लिम महिला ने उसे सिक्खों के पहुंचने की सूचना दे दी, वह वापिस लौट आया।

भाई लछमण सिंघ धारोवाली का जत्था २० फरवरी को प्रात: ६ बजे गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुंचा। सिक्खों ने गुरुद्वारे के अंदर जाकर शांतिपूर्ण ढंग से माथा टेका और मर्यादा के अनुसार शबद-कीर्तन आरंभ कर दिया। भाई लछमण सिंघ धारोवाली श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ताबिया में बैठे हुए थे। सारी संगत श्रद्धापूर्वक कीर्तन में लीन थी कि अचानक महंत ने बाहर के दरवाजे बंद करा दिये और कत्लेआम का हुक्म दे दिया। अंधाधुंध गोलियां चलने लगीं। कुछ पलों में ही पच्चीस से अधिक सिक्ख हाल के अंदर ही शहीद हो गये। संगत पर ईंट-पत्थर भी बरसाये जाने लगे। कुछ गोलियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को भी लगीं। लगभग साठ सिक्ख उस समय चौखंडी की ओर थे। उन्होंने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। इसके बाद महंत व उसके साथियों ने छत पर आकर गोलियां बरसानी आरंभ कर दीं। जो सिक्ख कमरों में बंद थे उन्हें भी दरवाजे तोड़ कर शहीद कर दिया गया। जहां भी सिक्ख दिखाई दिये, उन्हें गोलियों से भून दिया गया अथवा फरसे से काट डाला गया। तीन सिक्खों का रेलवे लाइन तक पीछा कर शहीद कर दिया गया। दो सिक्खों को खेतों में शहीद कर दिया गया। स्पष्ट था कि महंत नारायण दास अपनी गद्दी बचाने से अधिक सिक्खों को शहीद कर आतंक पैदा करने में रुचि ले रहा था। उसने जिस तरह हथियार जमा किये थे, भाड़े के बदमाश जुटाये थे, यह एक घोर अपराधी ही कर सकता था, कोई महंत, पुजारी अथवा धर्म-कर्म वाला व्यक्ति हरगिज नहीं। उसने स्वयं ही साबित कर दिया था कि वह धर्म-स्थान के लिये कितना अयोग्य है और समाज के लिये कितना बड़ा

संकट है।

सारे सिक्खों को शहीद करने के बाद तो उसने अमानवीयता की और भी हदें पार कर दीं। गुरुद्वारे के अंदर शहीद व घायल सिक्खों को एकत्र किया गया। महंत और उसके साथियों ने जम कर शराब पी। मृत सिक्खों की जेबें खंगाल कर जो भी मिला, लूट लिया गया। आग जला कर सभी को जला दिया गया। इस भयानक कत्लेआम की सूचना बाहर आते ही चारों ओर सनसनी और दहशत फ़ैल गई। श्री ननकाणा साहिब के सारे रास्ते बंद कर दिए गये और स्टेशन पर किसी भी ट्रेन के रुकने पर रोक लगा दी गई। सरदार सोहन सिंघ जोश ने लिखा है कि पुलिस का देर से पहुंचना संदेह पैदा करने वाला था। २१ फरवरी की दोपहर तक सिक्ख नेता और बड़ी संख्या में संगत खेतों के रास्ते पहुंच चुकी थी। गुरुद्वारे के अंदर का दृश्य रौंगटे खड़े करने वाला था। चारों ओर कारतूसों, पत्थरों, लाशों के टुकड़ों का अंबार लगा हुआ था। शाम होने तक वहां हजारों सिक्ख जमा हो चुके थे। अनगिनत सिक्खों को बाहर सेना ने रोक रखा था। सिक्खों का आक्रोश चरम पर था। सरकार ने स्थिति की संवेदनशीलता को भांपते हुए सिक्खों को गुरुद्वारे की चाबियां सौंप दीं। सभी शहीदों का विधि से अंतिम संस्कार किया गया। एक रिपोर्ट के अनुसार २१ फरवरी के कत्लेआम में कुल १६८ सिक्ख शहीद हुए थे । उस समय उपस्थित सारे ही सिक्ख शहीद हो गये थे। इस कत्लेआम की इतनी दहशत फैली कि सभी स्थानीय निवासी अपने घर छोड़ कर भाग गए थे। सिक्खों ने बाद में उनके खुले घरों की रक्षा की और उनसे वापिस लौटने की अपील की।

श्री ननकाणा साहिब के इस साके के बाद रोष-प्रदर्शन के लिए सिक्ख पुरुषों ने काली पगड़ी व सिक्ख स्त्रियों ने काले दुपट्टे लेने आरंभ कर दिये थे। बाद में काली पगड़ी अकालियों की पहचान बन गई। महंत नारायण दास और उसके साथियों को गिरफ्तार कर उन पर मुकद्दमा चलाया गया। १२ अक्टूबर, सन् १९२१ को महंत और उसके सात साथियों को फांसी की सजा सुनाई गई। बाद में हाई कोर्ट ने फांसी की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया।

गुरुद्वारों की पवित्रता और मर्यादा को बनाये रखने के लिये सिक्खों ने अभूतपूर्व शहादतें दी हैं। ये शहादतें दी इस बात का प्रतीक हैं कि एक सिक्ख के जीवन में गुरु-घर का स्थान और उसकी मर्यादा सर्वोपरि है। यह आज चिन्तन का विषय है कि गुरु-घर की मर्यादा बनाए रखने में हमारा कितना और कैसा योगदान है।

दुखान्तिका साका श्री ननकाणा साहिब

*-स. सुरजीत सिंघ**

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब वह पवित्र स्थान है जहां सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश हुआ । सिक्ख जगत के लिए श्री जनकाणा साहिब उसी प्रकार से सर्वोच्च श्रद्धेय केन्द्र है जैसे हिन्दू धर्म में राम जन्म-भूमि अयोध्या एवं श्रीकृष्ण जन्म-भूमि मथुरा, इस्लाम धर्म में मक्का-मदीना, यहूदियों के लिए यरूशलम एवं ईसाई धर्म के लिए रोम विटीकन है ।

सिक्ख धर्म का इतिहास अपने गुरुधामों की सुरक्षा के लिए अनगिनत शहीदी साकों से भरा पड़ा है। इसी क्रम में पवित्र ऐतिहासिक गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को महन्तों के कुप्रबन्धन से मुक्त करा, गुरमति मर्यादा स्थापित करने हेतु असंख्य सिंघों की हुई शहीदीयों को ही 'साका श्री ननकाणा साहिब' नाम से स्मरण किया जाता है, जो कि श्री गुरु नानक देव जी की पवित्र बाणी में अंकित है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने शासन-काल के मध्य कई गुरुद्वारों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार करवाकर उनके नाम पर जमीनें एवं जागीरें लगवा दी थीं, ताकि गुरुद्वारों का प्रबन्धन सुविधाजनक हो सके। यह कहना उचित होगा कि गुरुद्वारों को समयानुसार 'धर्मसाल' भी कहा जाता रहा है। धर्म-स्थल समस्त सद्गुणों से संपन्न सुसंस्कृति के आधार होते हैं, जो सार्वभौम, शाश्वत, सत्यसत्ता के केंद्र हैं। धर्म वह पवित्र सिद्धान्त एवं आदर्श है जो जीवन-मूल्यों को अनुशासित, सुव्यवस्थित कर श्रेष्ठ कर्त्तव्य-पालन का मार्ग प्रशस्त करता है, क्योंकि जीवन एक अमूल्य हीरा है। आत्मालोचन, आत्मपरिष्कार द्वारा स्वार्थ को त्यागते हुए दूसरों के हित अर्थात् परमार्थ कर बुराई रूपी कीचड़ से बचकर आत्मा को पवित्र बनाया जा सकता है। धर्म-स्थल जीवन में सम्पूर्णता के प्रत्यक्ष हैं, बोधक हैं, मार्गदर्शक हैं, पथ हैं, पाथेय हैं, आदेश हैं, उपदेश हैं, साधना हैं एवं सिद्धि हैं।

अंग्रेज-शासन काल में गुरुद्वारों के प्रबन्धन में अंग्रेज सरकार का अनुचित सीधा हस्तक्षेप होने लग गया था, जिस कारण गुरुधामों पर अनाधिकृत रूप से काबिज होते उदासी-निरमले महन्त सरकारी समर्थन से गुरमति विपरीत कार्यवाहियों में लिप्त हो अपनी-अपनी मनमानियां करने लग गये थे। पवित्र गुरुधामों के रूहानी-पवित्र वातावरण को महन्तों ने अपने ढोंगी आचरण,

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान), फोन : ९४१३६-५१९१७*

नीच कर्मों से अपवित्र एवं दूषित कर रखा था। सिक्ख पंथ एवं विशेषकर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के निकट रहने वाले सिक्ख धर्मावलम्बियों के हृदयों में महन्त नारायण दास, जो कि गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी श्री ननकाणा साहिब पर अनाधिकृत रूप से काबिज था, के प्रति बहुत आक्रोश और गुस्सा फूट रहा था। २०वीं सदी के दूसरे दशक में श्री गुरु नानक-नामलेवा संगत ने गुरुधामों को महन्तों से आजाद कराने एवं गुरु-मर्यादा को पुनः स्थापित करने के लिए 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' चलाई, जिसको दूसरे शब्दों में 'अकाली लहर' भी कहा जाना उचित होगा, क्योंकि अकाली शब्द सीधा ईश्वर को सम्बोधित करता है, जिसका न कोई रूप है, न रंग है और जो जन्म-मरण से मुक्त है।

पंजाब के गाँव धारोवाली, में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को आजाद कराने के लिए 'सिक्ख पंथ' ने मिलकर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर मोहर लगा दी, जिसकी जानकारी महन्त को भी उसी समय मिल गयी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, जो समयानुसार अस्तित्व में आ चुकी थी, द्वारा २३ जनवरी से ६ फरवरी, १९२१ ई. तक श्री अकाल तख्त साहिब पर इस सम्बन्ध में विस्तृत विचार-विमर्श कर महन्त को उसके आचरण और गुरुद्वारा प्रबंध सुधार के लिए खुली चिट्ठी लिखी गयी, किन्तु महन्त ने उस प्रस्ताव को नजरअन्दाज करते हुए इसके विपरीत अंदर ही अंदर भारी हमले की पूरी तैयारी कर ली थी। पंथक मतानुसार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में दीवान और लंगर के प्रबंध हेतु एक ५-सदस्यीय पंथक कमेटी का गठन कर लिया गया, जिसमें सरदार लछमण सिंघ धारोवाली, सरदार करतार सिंघ झब्बर, सरदार दलीप सिंघ, सरदार बखशीश सिंघ, एवं सरदार तेजा सिंघ समुंदरी को शामिल किया गया।

सिक्ख-जगत ने सामूहिक रूप से १९ फरवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुंचने का निर्णय कर लिया था, किन्तु महन्त द्वारा किये गये जानलेवा खून-खराबे को देखते हुए इसे आगामी तिथि तक स्थगित करना उचित समझा गया। सरदार लछमण सिंघ धारोवाली का जत्था अपने कार्यक्रमानुसार गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के निकट पहुंच गया था, किन्तु सरदार करतार सिंघ का जत्था रास्ते में ही रोक लिया गया, क्योंकि महन्त ने हमले की पूरी तैयारी कर रखी थी। स. लछमण सिंघ धारोवाली को रोकने की बहुत कोशिश की गई, किन्तु उनका कहना था कि उन्होंने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को आजाद कराने की अरदास कर दी है, इसलिए वे वापिस नहीं मुड़ सकते और न ही अपने निर्णय को बदल सकते हैं।

सरदार लछमण सिंघ अपने जत्थे सहित जिनकी गिनती लगभग १५० थी, २० फरवरी, १९२१ ई. को प्रातः ६ बजे गुरुद्वारे में प्रवेश कर गए। स्वयं श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में बैठ गए और जत्थे के अन्य सदस्य दीवान हाल में बैठ गुरबाणी-गायन में ध्यानमग्न हो गए। महन्त ने चालाकी से गुरुद्वारे का मुख्य द्वार बन्द करवा दिया, ताकि निहत्थे लोगों पर अचानक हमला होने पर उनमें से कोई बाहर न निकल सके।

महन्त के गुंडों ने एकाएक ध्यानमग्न बैठे सिंघों पर बन्दूकों से गोलियाँ बरसाते हुए गन्डासों, भालों, तलवारों से हमला बोल दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में बैठे सरदार लछमण सिंघ तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पावन स्वरूप को कई गोलियां लगी। घायल एवं शहीद हो चुके सिंघों पर मिट्टी का तेल डालकर महन्त के गुंडों द्वारा उन्हें बेरहमीपूर्वक जला दिया गया। इस हृदय-विदारक दृश्य को देखकर तो मानवता भी लज्जित हुई होगी :

जहां शहीदों का रक्त गिरता है,
वहीं से उगता है हर सवेरा ।
जहां जलाता है देह दीपक,
वहां न आता है फिर अंधेरा।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के निकट स्थित सरदार उत्तम सिंघ के कारखाने में बैठे सरदार दलीप सिंघ ने जब गोलियों की आवाज सुनी तो वे भी तुरन्त गुरुद्वारे की तरफ पहुँच गए। महन्त के गुंडों ने सरदार दलीप सिंघ को देखते ही गंडासों से निर्दयतापूर्वक वार कर उन्हें घसीटते हुए आग की जलती हुई भट्टी में फेंक दिया। महन्त नारायण दास अपने क्रूर अत्याचारों से घबराकर वहां से भाग गया। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को आजाद कराने के लिए की गई अरदास की मर्यादा को कायम रखते हुए भाई लछमण सिंघ ने अपने शहीदी जत्थे के साथ कुर्बानी देकर आजादी की अलख जगा दी। सरदार उत्तम सिंघ कारखाने वाले ने घटित खूनी साके के सम्बन्ध में सिक्ख पंथक जत्थेबंदियों और अंग्रेज सरकार को तुरन्त सूचनाएं भेजकर क्रूर कत्लेआम से अवगत करवा दिया।

२१ फरवरी, १९२१ ई. को प्रातः काल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, पंथक जत्थेबन्दियाँ एवं असंख्य संगत गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुंच गयी। प्रमुख समाचार-पत्रों में इस खूनी साके के विस्तृत दर्दनाक आलेख प्रकाशित हुए। उच्च सरकारी अधिकारी भी पहुंच कर दुःख प्रकट करने लगे। अँग्रेज सरकार के कमिशनर मिस्टर किंग ने २१ फरवरी, १९२१ ई. को सायं काल गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की चाबियां सौंपते हुए समूह प्रबंधन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हाथों कर दिया। समूह शहीद प्राणियों का गुरु-मर्यादानुसार अन्तिम संस्कार कर दिया गया। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के इस खूनी साके में सिक्ख धर्मावलम्बियों के हृदय में आक्रोश की ज्वाला भड़क उठी। अंग्रेज सरकार ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के खूनी साके के दोषी महन्त नारायण दास तथा उसके साथियों को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया तथा उन पर न्यायालय में मुकद्दमा चलाया गया। न्यायालय ने १२ अक्टूबर १९२१ ई. को महन्त नारायण दास तथा उसके ७ साथियों को फांसी की सजा से दण्डित किया, ८ कातिलों को आजीवन काले पानी की सजा तथा १६ दोषियों को ७-७ वर्ष की कठोर कारावास की सजा से दण्डित किया। हाई कोर्ट में अपील होने पर कुछ सजाएँ कम कर दी गईं। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के खूनी साके के उपरान्त समूह गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंधन सिक्ख पंथ के अधीन होता चला गया ।

करम करत सि सूकरह

*-डॉ. परमजीत कौर**

चौरासी लाख योनियों (जन्म) में सबसे उत्तम योनि मनुष्य की मानी गई है :

लख चउरासीह भ्रमतिआ
दुलभ जनमु पाइओइ ॥ (पन्ना ५०)

बड़े पुण्यों के बाद यह शरीर मिलता है, मगर इसकी श्रेष्ठता तभी कायम रहती है, जब मानव-देह प्राप्त करके मनुष्यों वाले कर्म किए जाएं। प्रत्येक मनुष्य को यह मालूम होता है, लेकिन सांसारिक चक्रव्यूह में फँस कर वह अपने जीवन के उद्देश्य को भूलकर ऐसे कर्म करने लग जाता है जो उसके पहले किए गये पुण्य (जिनके कारण उसको मानव-देह प्राप्त हुई है) को व्यर्थ कर देते हैं। मानव-देह प्राप्त करके भी वह किस समय तथा किस प्रकार पशुओं वाले कर्मों में लिप्त हो जाता है, इसका एहसास शायद उसको स्वयं भी नहीं होता। श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि जो मनुष्य अपने शरीर के पालन-पोषण के लिए पर-धन का हरण करते हैं, दूसरों के कार्यों में विघ्न डालते हैं, कई तरह के मन्दवचन बोलते हैं, जिनके मन में माया की भूख है, तृष्णा के अधीन होकर अधिकाधिक प्राप्ति के बारे में सोचते रहते हैं, वे मनुष्य सूअरों के समान कर्म करते हैं :

पर दरब हिरणं बहु विघन करणं
उचरणं सरब जीअ कह ॥
लउ लई त्रिसना अतिपति मन माए
करम करत सि सूकरह ॥ (पन्ना १३६०)

जब मनुष्य स्वयं को केवल शरीर समझने लगता है तब शारीरिक सुखों के लिए, विलासी जीवन की प्राप्ति के लिए, एक-दूसरे से आगे बढ़ने की प्रतियोगिता में अच्छे-बुरे कर्मों का अंतर भूल जाता है। मानव-जन्म प्राप्त करके भी, परमात्मा को भूलकर पशु प्रवृत्ति वाला बन जाता है। पर-धन का लोभ उसे असत्य तथा पाप के रास्ते पर ले जाता है। वो दूसरों को हानि पहुंचाने वाले, न करने योग्य कर्म करने में संकोच नहीं करता। अधिक धन की भूख, मान-

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

प्रतिष्ठा, उच्च पद की लालसा के कारण ईर्ष्या, निंदा, क्रोध, अहंकार आदि विकार उसकी विवेक बुद्धि पर हावी हो जाते हैं :

जिसु अंतरि लोभु कि करम कमावै भाई
कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥ (पन्ना ६३५)

अपनी विकराल लालसा के अधीन छोटे-बड़े, अपने-पराए का लिहाज छोड़कर समझाने वाले को या अपने स्वार्थ के रास्ते में आने वाले को बोल-कुबोल बोलने का मानो स्वभाव बन जाता है। आजकल तो स्वयं को आगे बढ़ाने के लिए दूसरों के मार्ग में बाधा उत्पन्न करना साधारण-सी बात हो गयी है। आज के युग में मनुष्य इसलिए दुखी नहीं है कि उसके पास धन-सम्पदा आदि नहीं है या थोड़ा है, वह तो इसलिए दुखी है, चिन्तित है, परेशान है कि दूसरों के पास उससे अधिक है। मनुष्य ईर्ष्या, जलन तथा अपनी असीम तृष्णा के अधीन योग्य-अयोग्य, प्रत्येक स्थान पर प्रवृत्त हो जाता है।

कर्मों की अपवित्रता, विकारों की गंदगी उसे परेशान नहीं करती। मानों सूअरों के समान गंदगी में रहने की आदत बन गई हो। पर-घर में ताक-झाक की आदत ने आचरण को भ्रष्ट कर दिया है। अपने स्वार्थ के लिए किसी का भी बुरा सोचना तथा लोकदिखावा करना जिंदगी का हिस्सा बन गया है। परिणामस्वरूप मन की अशान्ति शारीरिक तथा मानसिक रोगों का कारण बन गयी है।

आओ, विचार करें कि गुरु के सिक्ख कहलाने वाले हम लोग गुरु साहिब द्वारा वर्जित सूअरों वाले काम तो नहीं कर रहे! यदि हम भी पर-धन का लोभ करते हैं, दूसरों के कार्यों में रोड़े अटकाते हैं, विघ्न डालते हैं, तृष्णा के अधीन अधिकाधिक माया के चक्कर में फंसे हुए हैं, तो निश्चय ही अपने रत्न-जन्म को गंवा रहे हैं :

सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥
इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥

(पन्ना ७४१)

कविता

सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया

–डॉ. जसप्रीत कौर .फ़लक*

एक समय पंजाब में, जुल्म की आँधी आई थी।
बुझे–बुझे–से दीपक थे, वीरानी–सी छाई थी।

मजबूरी थी, ज़ंजीरें थीं, खोई हुई खुशहाली थी।
अब्दाली के जुल्मों से, फैल रही बदहाली थी।

जुल्म मिटाने का जज़्बा, दिल में लेकर आया था।
जस्सा सिंघ आहलूवालिया, इक जोश का तूफ़ाँ लाया था।

हिम्मत और दलेरी की, तारीफ़ें सब करते थे।
देख रौबीली आँखें उसकी, दुश्मन भी उससे डरते थे।

रण में देख उस योद्धा को, मौत भी घबरा जाती थी।
उसके आगे भारी–भरकम, फौज़ भी टिक न पाती थी।

बिजली–सी कृपाण हवा में, जिस दम भी लहराई थी।
क्या कहने उस मंज़र के, ज़ालिम ने मुँह की खाई थी।

उसके आगे बड़े–बड़े भी, अपनी हिम्मत तोड़ गए।
भाग उठे मैदान–ए–जंग से, हथियार तक अपने छोड़ गए।

उसकी निडरता को देख–सुनकर, मज़लूम भी दिलदार बने।
जस्सा सिंघ सरदार वीर, सब सिक्खों के सरदार बने।

हम नहीं कहते '.फ़लक' यह, आलम सारा कहता है।
जस्सा सिंघ–सा वीर सदा, इतिहास में ज़िन्दा रहता है।

*मकान नं.–११, सेक्टर–१–ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना, फोन : ९६४६८–६३७३३

ख़बरनामा

पाकिस्तान में मर्दुमशुमारी के फार्म में सिक्खों को अलग कौम के तौर पर दर्ज करना प्रशंसनीय : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : १४ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पाकिस्तान में मर्दुमशुमारी के फार्म में सिक्खों को अलग कौम के तौर पर दर्ज करने का स्वागत किया है। उन्होंने इस कार्य के लिए यत्न करने वालों की प्रशंसा करते हुए कहा कि पाकिस्तान में सिक्खों को अलग कौम के तौर पर लंबे अरसे के बाद मान्यता मिलना पूरी कौम के लिए ख़ुशी की बात है। एडवोकेट धामी ने कहा कि इससे पाकिस्तान में बसते सिक्खों के मूलभूत अधिकारों और विभिन्न स्थानों पर प्रतिनिधित्व के लिए फ़ायदा मिलेगा और देश में सिक्खों के सही आंकड़ों के बारे में भी स्पष्टता बनेगी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने कहा कि पूरी दुनिया में सिक्खों ने अपनी अलग पहचान के साथ बड़े मुकाम हासिल किये हैं और सिक्खों को उनकी पहचान सहित हर देश को स्वीकार करना ज़रूरी है।

एडवोकेट धामी ने हरियाणा गु. प्र. कमेटी के पदाधिकारियों के चयन को किया रद्द

श्री अमृतसर : २१ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को तोड़ने के उद्देश्य के अंतर्गत सरकारी हस्तक्षेप द्वारा बनाई जा रही हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पदाधिकारियों के हुए चयन को रद्द करते हुए कहा कि सिक्ख कौम ऐसी किसी भी सरकारी कमेटी को स्वीकार नहीं करेगी और इसका विरोध जारी रखेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान जी ने कहा कि सिक्ख विरोधी विचारधारा वाली शक्तियों और सरकारों के हस्तक्षेप द्वारा जबरन बनाई जा रही हरियाणा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्खों के हित में नहीं है। यह पंथक संस्थायों को तोड़ने की एक चाल है, जिसके अनुसार सिक्ख कौम द्वारा प्रकट की गई आशंकाओं को इसके पदाधिकारियों का चयन कर सत्य साबित कर दिया है। उन्होंने कहा कि जानकारी के अनुसार हरियाणा सरकार द्वारा यह चयन गुरु-घर की जगह कुरुक्षेत्र के डिप्टी कमिशनर कार्यालय में करवाया गया है, जो सिद्ध करता है कि हरियाणा गु. प्र. कमेटी का पंथक सरोकारों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, बल्कि यह सरकार के सीधे हस्तक्षेप द्वारा बनाई जा रही है। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान ने कहा कि कौमी कार्य सरकारी कार्यालयों में नहीं, बल्कि पंथक रिवायतों के अनुसार गुरु साहिब जी की हज़ूरी में किये जाते हैं। एडवोकेट धामी ने कहा कि हमने पहले भी कहा था कि हरियाणा

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी आरएसएस के इशारे पर स्थापित की जा रही है, जिसकी पुष्टि आज हुई है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के साथ-साथ हरियाणा की भाजपा सरकार भी सिक्ख मसलों को सीधा अपने हाथ में लेकर अपनी मंशा के अनुसार चलाना चाहती है, जबकि सिक्ख कौम का यह इतिहास रहा है कि इसने कभी भी सरकारी हस्तक्षेप बरदाश्त नहीं किया है।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने हरियाणा के सिक्ख नेताओं को आरएसएस तथा इसके राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी की सरकारों द्वारा सिक्ख मसलों में हस्तक्षेप करने की चली जा रही चालों को समझने की अपील करते हुए कहा कि वे कुर्बानी देकर स्थापित की गई अपनी संस्थायों की सलामती के लिए वैसे ही कौमी एकजुटता दिखाएं, जैसे स. जगदीश सिंघ झींडा ने किया है। उन्होंने कहा कि अभी भी इस मामले में हरियाणा के सिक्ख नेताओं को श्री अकाल तख़्त साहिब के नेतृत्व में आकर विचार और संवाद को आगे बढ़ाना चाहिए। एडवोकेट धामी ने कहा कि हरियाणा के सिक्खों का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और वे ख़ुद बहुत सम्मान सत्कार करते हैं, जो हमेशा कायम रहेगा।

मध्य प्रदेश में संत भिंडरांवाला की तस्वीर के कारण सिक्ख पर दर्ज केस रद्द हो एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : २२ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने मध्य प्रदेश के जबलपुर में नगर कीर्तन के दौरान ट्रेक्टर पर संत जरनैल सिंघ खालसा भिंडरांवाला की तस्वीर लगाने के कारण एक सिक्ख नौजवान पर केस दायर कर उसे गिरफ़्तार करने की कड़ी निंदा की है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि मध्य प्रदेश पुलिस द्वारा की गई यह कार्यवाही अल्पसंख्यक वर्ग— सिक्खों के साथ बड़ी बेइन्साफ़ी और धक्केशाही है, जिससे सिक्ख भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने कहा कि भारत बहुधर्मी देश है, जिसमें संविधान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक आज़ादी हासिल है। एडवोकेट धामी ने कहा कि संत जरनैल सिंघ खालसा भिंडरांवाला सिक्खों के कौमी शहीद हैं, जिन्होंने जून १९८४ में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के अपमान के विरुद्ध संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त की। उन्होंने कहा कि संत भिंडरांवाला की तस्वीर लगाना गुनाह नहीं है, इसलिए जबलपुर में सिक्ख नौजवान पर दर्ज केस तुरंत रद्द किया जाए। शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और गृहमंत्री श्री नरोत्तम मिश्रा से अपील की कि वे इस मामले में हस्तक्षेप कर बेकसूर सिक्ख नौजवान के विरुद्ध दर्ज किए केस को रद्द करने के निर्देश जारी करें। उन्होंने मध्य प्रदेश के प्रतिनिधि सिक्खों और केंद्रीय श्री गुरु सिंघ सभा सहित सभी गुरुद्वारा कमेटियों से भी अपील की कि वे इस मामले को ज़ोरदार ढंग के साथ स्थानीय स्तर पर उठाएं, ताकि सिक्ख नौजवान को इन्साफ मिल सके।

सन् 1984 में हुए कानपुर सिक्ख कत्लेआम के हर दोषी को मिले सख़्त सज़ा : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : २७ दिसंबर : सन् १९८४ में उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुए सिक्ख कत्लेआम के पीड़ितों को इन्साफ और दोषियों को सज़ा दिलाने के लिए सक्रिय दिल्ली के नेता स. कुलदीप सिंघ (भोगल) के साथ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका ने बैठक कर अदालत में चल रहे मामलों की स्थिति पर विचार-विमर्श किया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने स. कुलदीप सिंघ (भोगल) की माँग पर इस मामले में कानूनी सहयोग के लिए एडवोकेट सिआलका की ज़िम्मेदारी लगाई है। कानपुर में हुए सिक्ख कत्लेआम में १२७ सिक्ख मारे गए थे, जिनके लिए सिक्ख कौम लगातार इन्साफ की माँग करती आ रही है। इस सम्बन्ध में ताज़ा स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने और चल रहे केसों में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से कानूनी योगदान के मद्देनज़र एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका ने स. कुलदीप सिंघ (भोगल) के साथ हुई बातचीत के बारे में बताया कि चाहे लगभग चार वर्ष पूर्व सरकार द्वारा एक एसआईटी बनाई गई थी और कई गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, लेकिन सभी दोषी अभी तक गिरफ़्तार नहीं किए गए। एडवोकेट सिआलका ने बताया कि स. कुलदीप सिंघ (भोगल) के अनुसार ७० से अधिक लोग इसमें दोषी हैं, जबकि अभी तक ३४ के करीब दोषी ही पकड़े गए हैं। उन्होंने बताया कि हिरासत से बाहर दोषी सरकारी वकीलों की ढिलाई के कारण ज़मानत प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिस कारण पीड़ित सिक्ख परिवार मानसिक पीड़ा से गुज़र रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुख्य दोषियों में शामिल जुजविंदर सिंह कुशवाहा, जो एक कांग्रेसी नेता का भतीजा है, अपने असर-रसूख से केसों को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सिक्ख संस्था की तरफ से केसों की मौजूदा स्थिति जानने और मदद के लिए उनकी ड्यूटी लगाई है, ताकि कानूनी सहायता प्रदान की जा सके।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सन् १९८४ का सिक्ख कत्लेआम अति पीड़ादायक है, जिसके प्रत्येक दोषी को आवश्यक रूप से सज़ा मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पीड़ितों के दर्द को महसूस करती है और इसी के अंतर्गत ही कानपुर सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को सज़ा दिलाने और उनकी ज़मानत के विरुद्ध ज़ोरदार ढंग के साथ आवाज़ उठाने के लिए कानूनी सहायता के लिए एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका की ड्यूटी लगाई गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि एडवोकेट सिआलका द्वारा जो भी रिपोर्ट दी जायेगी, उसके अनुसार कानूनी माहिरों की मदद लेकर कानूनी सहायता मुहैया करवाई जायेगी।

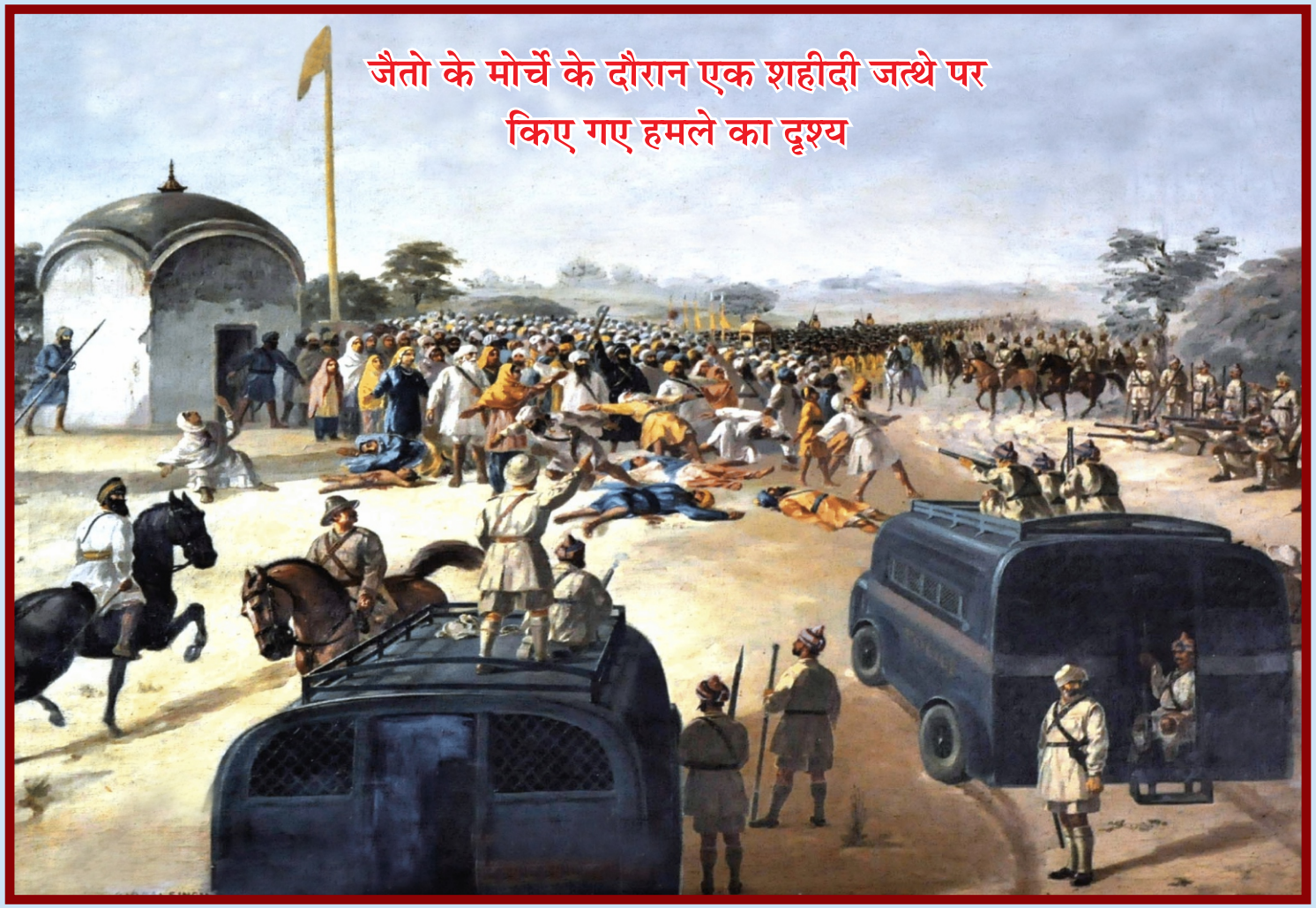

जैतो के मोर्चे के दौरान एक शहीदी जत्थे पर
किए गए हमले का दृश्य

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN February 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

साका श्री ननकाणा साहिब का हृदयवेधक दृश्य

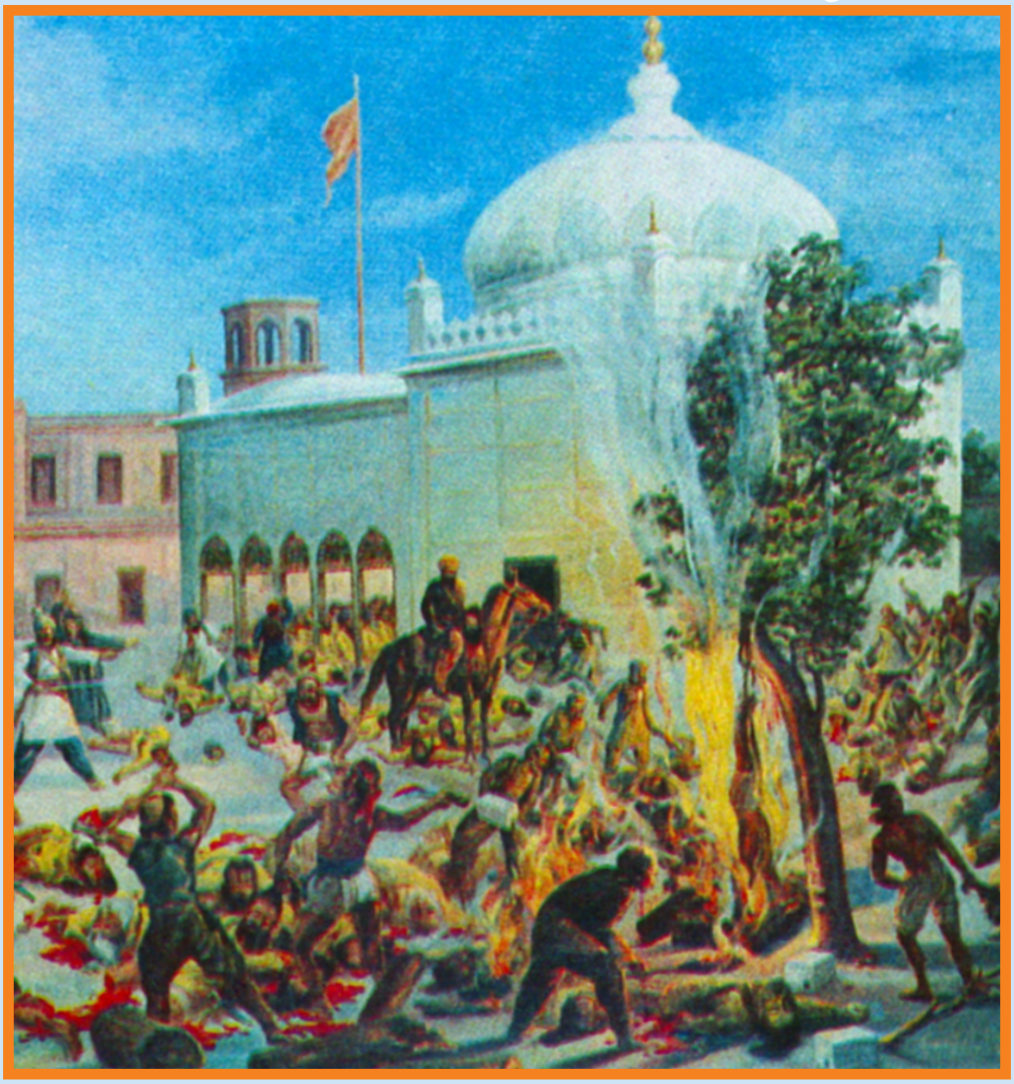

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-2-2023